चन्दामामा
नवम्बर १९८७
Rs 2·50

No share prices,
no political fortunes, yet...

Over 40% of Heritage readers are professionals or executives, 61% from households with a professional / executive as the chief wage earner. Half hold a postgraduate degree or a professional diploma.

It's an unusual magazine. It has a vision for today and tomorrow.

It features ancient cities and contemporary fiction, culture and scientific developments, instead of filmstar interviews and political gossip. And it has found a growing readership, an IMRB survey reveals. Professionals, executives and their families are reading The Heritage in depth – 40% from cover to cover, 42% more than half the magazine.

More than 80% of The Heritage readers are reading an issue more than once.

And over 90% are slowly building their own Heritage collection.

Isn't it time you discovered why?

THE HERITAGE

So much in store, month after month.

नवम्बर 1987

विषय-सूची

एक प्रति : २-५०

वार्षिक चन्दा : ३०-००

"तैयार, होशियार, करो फ़ायर!"
अंकल लियो ने कहा हमला करो. और हमने अपनी-अपनी बंदूकें उठाकर शुरू कर दिया फ़ायर. मैं लाया था अपनी ऑटो राइफ़ल और काउबॉय स्पेशल और विवेक के पास था फ़्लाइंग-सॉसर-गन और फ़नशूटर.
दन-दन-दन-दनादन... चलने लगीं गोलियां. दुश्मन के पास थी बुल्स आय गन, मौज़र पिस्टल और रैट-ए-टैट. और वो पूरे ज़ोर से हमारी तरफ़ आ रहे थे.
ऐसे में रमेश का जंगल कमांडो बड़े काम आया, उसी ने हमें हार से बचाया. दुश्मन भाग खड़ा हुआ और हम जीत गए.
अंकल लियो की टोली में तुम भी शामिल हो सकते हो. अगर तुम्हारे पास लियो की खेल- बंदूकें नहीं तो जल्दी से ले आओ.
"खूब सारी हैं, सभी एक-से-एक प्यारी हैं."
मेरे पापा यही कहते हैं.
LEO
लियो खेल-बंदूकें! २१ रु. से ९९ रु. तक.
आओ खेलें!
LEO TOYS
LINTAS LEO 5 2116 HI

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'
संचालक : नागिरेड्डी

जब किसी व्यक्ति के गुण-विशेषों की चर्चा होती है, उस समय उन गुणों में दानशीलता का गुण होने पर वह व्यक्ति विशेष प्रशंसा का पात्र बन जाता है। वास्तव में, दानशीलता एक ऐसा गुण है जो मनुष्य को महान बना देता है। किन्तु, अयोग्य अथवा अपात्र व्यक्ति को दिया गया दान कभी-कभी मुसीबत का कारण बन जाता है। इसके उदाहरण स्वरूप आप पढ़िये, "अपात्र दान" शीर्षक कहानी।

अमर वाणी

किं करोत्येव, पांडित्यमस्थाने विनियोजितम् ।
अंधकार प्रतिच्छन्ने, घटेदीप इवाहितः ।।

[अस्थान में प्रदर्शित किया गया पांडित्य कोई प्रयोजन सिद्ध नहीं करता। बंद घट के भीतर जलाये गये दीपक से अंधकार को नष्ट करने के समान वह निष्फल हो जाता है।]

वर्ष : ४० नवम्बर १९८७ अंक : ३

एक प्रति : २-५० :: वार्षिक चन्दा : ३०-००

EKCO

'चन्दामामा' के संवाद

सागर में नगर

मनुष्य को पृथ्वी पर निवास करने केलिए स्थान चाहिए। जापान अपनी जीवन-पद्धति को कायम रखते हुए स्थान का निर्माण करना चाहता है। टोक्यो से १५० कि॰ मी॰ दूर सागर में एक नगरका निर्माण करने की योजना पर जापान कटि बद्ध है। ५ कि॰ मी॰ दूर लंबे इस नगर का निर्माण बड़े-बड़े स्तंभों पर किया जायेगा। इस समुद्री नगर के निर्माण पर सौ मिलियन टन इस्पात काम में लाया जायेगा और लगभग २ लाख मिलियन डालर खर्च किये जायेंगे।

ऊँचा हाथी

साधारणतया हाथी की ऊँचाई ९ फुट १० इंच होती है। पर नेपाल के शुक्लापांटा वन्य जीवन रिज़र्व में ११ फुट ५ इंच ऊँचा एक हाथी है। ४५ वर्ष की आयु का यह हाथी संसार के हाथियों में सबसे ऊँचा माना जाता है। नेपाल तथा भारत के सीमावर्ती इस रिज़र्व में क़रीब ३००० हिरण (यांटीलोप्स) भी हैं।
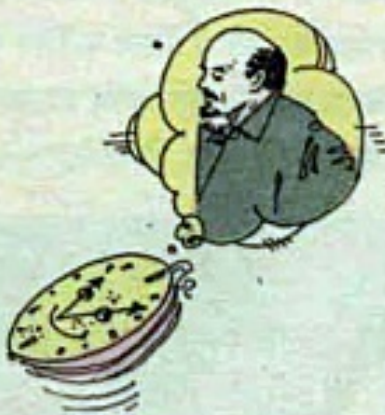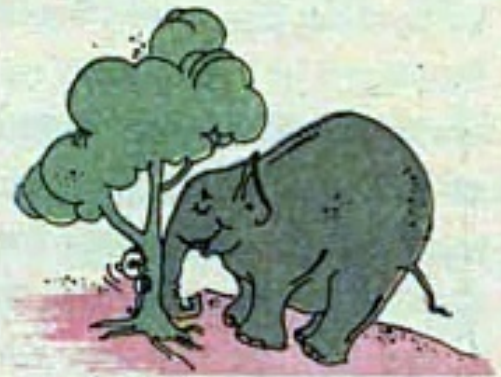
लेनिन की घड़ी

लेनिन ने १९१८ तक एक विशेष घड़ी को धारण किया था जो चांदी से बनी थी। म्युनिच में इस घड़ी को १०३,००० में नीलाम कर दिया गया।१९१७ में जो बोल्शेविक क्रांति हुई थी, उसके पूर्व यह घड़ी रूसी ज़ार चक्रवर्तियों के पास थी। इसके पश्चात् लेनिन ने १९१८ में इस घड़ी को जर्मनी के राजकीय नेता कार्ल लेबनेक को उपहार में दे दिया था।

योग चिकित्सा

हृदय रोगों से बचने के लिए तथा हृदयरोगों की चिकित्सा के लिए योगाभ्यास कहाँ तक उपयोगी सिद्ध हो सकता है, इस दिशा में अनुसन्धान करने के लिए भारत एवं रूस के वैज्ञानिकों ने संयुक्त रूप से एक योजना बनाई है। मास्को की एक संस्था नई दिल्ली के अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के सहयोग से तीन वर्ष तक यह अनुसंधान कार्य करेगी।

प्राचीन चरित्रः

अशोक सुन्दरी

शिव और पार्वती एक दिन नन्दन वन में विहार कर रहे थे। तब शिव ने मन-वांछित फल प्रदान करनेवाले कल्पवृक्ष को पार्वती को दिखाया। कल्पवृक्ष की इस विशेष शक्ति की परीक्षा लेने के लिए पार्वती ने कल्पवृक्ष से कहा, "मुझे एक सुंदर शिशु प्रदान करो!" दूसरे ही क्षण पार्वती के हाथों में एक सुंदर बालिका प्रकट होगयी। पार्वती ने उस कन्या का नाम अशोकसुन्दरी रखा।

अशोकसुन्दरी के अद्भुत सौन्दर्य को देखकर हूंडासुर ने सोचा कि इस बालिका का अपहरण कर लेना चाहिए और जब यह युवावस्था को प्राप्त हो, तब इसके साथ विवाह करना चाहिए। पर हूंडासुर राक्षस को जब यह समाचार मिला कि पार्वती ने ऊर्वशी एवं पुरुरवा के पौत्र नहुष के साथ अशोकसुन्दरी के विवाह का निश्चय किया है, तो उसने एक षडयंत्र रचा। वह तुरन्त बालक नहुष की धाय के भीतर प्रवेश कर गया। धाय शिशु नहुष को एक रात पास के वन में ले गयी। वह असुर से आविष्ट थी, इसलिए उसे इस बात का ज्ञान न था कि वह क्या कर रही है। धाय में प्रविष्ट असुर ने नहुष को अपनी पत्नी को दे दिया और उसे मारकर उसका मांस पकाने का आदेश दिया। असुर-पत्नी ने यह कार्य अपनी रसोइयन को सौंपा। रसोइयन का हृदय उस सुन्दर बालक को देखकर वात्सल्य से भर गये। उसने उस बालक को वशिष्ठ ऋषि के आश्रम में पहुँचा दिया और किसी अन्य कोमल जानवर का मांस पकाकर असुर को परोस दिया।

नहुष महर्षि वशिष्ठ के आश्रम में पलकर बड़ा हुआ। उसने एक दिन एक कवि के मुख से अपनी जीवन गाथा को गीत रूप में सुना। महर्षि वशिष्ठ ने नहुष को यह भी बता दिया कि अशोकसुंदरी के साथ उसका विवाह दैव-निर्दिष्ट है। नहुष ने वीर वेश धारण किया और उसी क्षण अशोकसुंदरी से मिलने के लिए चल पड़ा। उस समय हूंडासुर अशोकसुंदरी को धमकी देकर अपने साथ विवाह करने के लिए बाध्य कर रहा था। नहुष ने उस दुष्ट असुर का वध किया और अशोक सुंदरी के साथ विवाह किया।

सिंहपुरी के दो युवकों शिवराम तथा केशव में अच्छी मित्रता थी। पढ़ाई पूरी होने के बाद उन्होंने नौकरी करना उचित न समझा और उसी शहर में दोनों अलग-अलग व्यापार करने लगे।

व्यापार आरंभ करने के कुछ दिन बाद जब दोनों की मुलाकात हुई तो शिवराम ने केशव से कहा, "व्यापार में हमने जो पूंजी लगायी है, अगर उसे हम एक वर्ष के अन्दर दुगुना कर सकें, तभी हम सच्चे अर्थ में व्यापारी कहलायेंगे। अपने शहर के कुछ धनी लोगों को लो! वे इसीलिए बड़े व्यापारियों के रूप में जाने माने जाते हैं, क्योंकि उन्होंने बहुत कम समय में इतना अधिक धन कमाया है। यह बात अलग है कि उन्होंने माल में मिलावट की है, तौल में दग़ा दी है और राज करों को भी नहीं चुकाया है। अगर हम सचमुच धनवान बनना चाहते हैं तो हमें उनका अनुकरण करना ही होगा इसके अलावा अन्य कोई उपाय नहीं है।"

शिवराम की बातें सुनकर केशव हँस पड़ा और बोला, "व्यापार तो सच्चाई से ही करना चाहिए। मेरा विश्वास यह भी है कि न्यायपूर्वक व्यापार करने पर जितना धन हमारे पास आना होगा, वह आकर ही रहेगा। अधिक धन के लिए हमें बेईमान होने की आवश्यकता नहीं है। व्यापार केवल धोखाधड़ी नहीं है वह एक काम है, धंधा है, उसे सच्चाई से ही करना चाहिए।"

केशव की बात सुनकर शिवराम खीझ उठा और बोला, "सुनो, न्याय और अन्याय जैसी बातों की कल्पना हम लोगों ने स्वयं की है? जैसे स्वर्ग और नरग की कल्पना। तुम्हें यह डर लगता है न कि अन्याय पूर्वक धन कमाने पर मृत्यु के बाद नरक में जाना पड़ेगा। हम खुद नहीं जानते कि नरक नाम की कोई चीज़ है या नहीं! ऐसे अर्थहीन विश्वासों को पालना और उनसे डरना अपने आप में ही एक नरक है।"

केशव ने बात को न बढ़ाने की दृष्टि से किसी

नमिता सहगल

प्रकार का प्रतिवाद नहीं किया और चुप बना रहा। वह जानता था कि शिवराम हठी स्वभाव का है अपने अनुभव से ही समझेगा, वैसे नहीं।

इस घटना को एक पखवारा बीत गया। तब एक दिन दोनों मित्र माल ख़रीदने के लिए पास के शहर कानपुर में गये।

कानपुर में दोनों अलग-अलग बाज़ारों में सौदा करते हुए घूमने लगे। उस दिन बड़ी तेज़ गर्मी थी। सूरज मानो आग उगल रहा था। धीरे-धीरे धूप बढ़ती गयी। शिवराम बहुत थक गया था। अब उसका सिर भी चकराने लगा।

शिवराम को छाया की तलाश थी। इससे पहले उसने इतनी गर्मी सहन नहीं की थी। आज आसमान से किरण-पुंज नहीं, शोले बरस रहे थे। वह बड़ी मुश्किल से एक एक कदम बढ़ा रहा था कि अचानक गश खाकर गली के बीच गिर गया

यह देख पास ही भट्टी पर काम कर रहा कोदण्ड लुहार दौड़कर वहाँ पहुँचा। वह शिवराम को दोनों हाथों से उठाकर अपनी दूकान में ले गया और उसे लिटाया। कोदण्ड शिवराम को होश में लाने के लिए उसके मुख पर ठंडा पानी छिड़कने लगा।

कुछ देर बाद शिवराम को होश आया और उसने धीरे-धीरे आँखें खोलकर देखा। सामने काले चेहरे और झबरी मूँछोवाला एक आदमी। पास में भट्टी में दहक रहे अंगारों के बीच तपाये हुए लोहे के छड़। शिवराम का दिल धड़कने लगा।

इस भयानक दृश्य को देख शिवराम सोचने लगा कि वह मरकर यमलोक में पहुँच गया है।

अपनी इस भ्रांति पर विश्वास कर शिवराम ज़ोर से चीख उठा ।

कोदण्ड लुहार शिवराम के पास गया और कुछ पूछने को हुआ पर शिवराम ने सोचा कि वह कोई यमदूत होगा । अब तो डर के मारे उसे काटो तो खून नहीं । उसकी घिगृघी बंध गयी । वह भय के कारण उठ बैठा और हाथ जोड़कर बोला- "बताओ, मुझे यहाँ क्यों लाये हो?"

कोदण्ड लुहार ने सोचा कि शिवराम उसके प्रति हाथ जोड़कर कृतज्ञता प्रकट कर रहा है । वह बोला, "भाई हाथ जोड़ने की कोई आवश्यकता नहीं है । मैंने तो केवल अपना कर्त्तव्य किया है । कर्त्तव्य से बढ़कर और कुछ नहीं है ।" यह कहकर वह अपनी भट्टी के पास पहुँचा और लोहे की छड़ों को अंगारों से बाहर निकाल कर उन्हें परखकर देखने लगा । लाल छड़ों को देखते ही शिवराम के होश ग़ायब होगये । उसे लगा कि यमदूत उसके शरीर को लोहे की छड़ों से दाग़ने जा रहा है । वह थर थर कांपने लगा और उसने चीख चीखकर आसमान सिर पर उठा लिया, "मुझे मत सताओ ! मैंने कोई पाप नहीं किया है । मेरा शरीर मत दागो ।"

चीख पुकार सुनकर लुहार की दूकान के सामने अच्छी ख़ासी भीड़ जमा होगयी । कोदण्ड लुहार ने असमंजस में खड़ी भीड़ को समझाते हुए कहा, "मैं इस आदमी को बिलकुल नहीं जानता । यह गली में बेहोश होकर गिर पड़ा था, इसलिए इसे उठाकर यहाँ ले आया हूँ । होश में आने के बाद यह भ्रमित-सा हो उठा है और इस तरह चिल्ला रहा है, मानो यमलोक में पहुँच गया है

और इसके शरीर को लोहे से दागा जानेवाला हो।"

उसी समय शिवराम को खोजता हुआ केशव भी वहाँ आपहुँचा। उसने लुहार से कहा, "लू लग जाने के कारण पित्त के प्रकोप से ये उलटा-सीधा कुछ कह रहे हैं, तुम बुरा मत मानो ये मेरे मित्र हैं और भले मानस हैं। हम व्यापार के काम से आज शहर में आये थे, अब जल्दी ही लौट जायेंगे।"

सारी बातों सुनने के बाद वहाँ जमा हुए लोग ठहाका मार कर हँस पड़े। भीड़ के छंट जाने के बाद दोनों मित्रों ने कोदण्ड लुहार को धन्यवाद दिया और सिंहपुरी की ओर निकल पड़े।

रास्ते में शिवराम केशव से बोला, "दोस्त, वैसे स्वर्ग और नरक में मेरा विश्वास नहीं है। पर यह बात मेरी समझ में नहीं आती कि मैं कोदण्ड लुहार की आकृति, वहाँ दहक रही भट्टी और तपे हुए छड़ों को देख कर यमलोक की कल्पना कैसे कर बैठा और क्यों इतना भयभीत होगया? क्या मेरे मन में सचमुच पाप का भय और उसका बुरा परिणाम कहीं गहरे में छिपा हुआ था? आज के अनुभव ने मुझे बहुत कुछ सिखा दिया।"

"शिवराम, मुझे तो एक ही बात समझ में आती है कि डींग मारनेवाला मनुष्य भी किस तरह डर का शिकार हो जाता है और यह सोचने लगता है कि गलत काम करने पर उसके सिर पाप लगेगा। तुमने ऐसा समझ लिया कि तुम मरकर यमलोक पहुँच गये हो और अब तुम्हें नरक की यातनाएँ भोगनी पड़ेगी। भ्रम की हालत में तुम्हारे मन से सच्चाई प्रकट होगयी।" केशव ने कहा।

"हाँ, दोस्त, तुम्हारा कहना बिलकुल सच है।" शिवराम ने सिर हिलाते हुए कहा।

"यह तो सच है कि मनुष्य मरने के बाद कहाँ पहुँचता है, इसे किसी ने नहीं देखा है। पर पाप-पुण्य, नरक-स्वर्ग के कारण लोगों में थोड़ी चेतना अवश्य आजाती है। भ्रान्तिवश ही मनुष्य स्वर्ग और नरक का अनुभव यहीं पर कर लेता है।" केशव ने कहा।

इसके बाद उसने यह सिद्धान्त बना लिया कि व्यापार में भी पूरी ईमानदारी से आगे बढ़ना चाहिए।

अनुभवों का परामर्श

शिवगिरि के राजा श्रीदत्त नम्र स्वभाव के व्यक्ति थे। वे जब भी राजसभा बुलाते, उस दिन परेशान हो जाते। उनका सिर दर्द करने लगता और उन्हें माथे पर पट्टी बांधनी पड़ती। इसका कारण था उनका दरबारी विद्वान अनिरुद्ध।

अनिरुद्ध निरर्थक श्लोकों से और व्यर्थ के प्रसंगों से सभासदों एवं राजा को भी खिन्न कर देता। वह राजकुल की पिछली दो पीढ़ियों से सभा-पंडित के पद पर था, इसलिए राजा अनिरुद्ध से कुछ कह भी नहीं पाते थे।

एक दिन गौरी शास्त्री नाम का एक गरीब ब्राह्मण राजा श्रीदत्त की सेवा में उपस्थित हुआ और बोला, "महाराज, मैं जहाँ-तहाँ पुरोहित का काम करके अपने बीवी-बच्चों को पालता हूँ। मैं अपनी इस स्थिति से अत्यन्त दुखी था, किन्तु मेरे सामने एक और समस्या आ उपस्थित हुई है।"

राजा श्रीदत्त ने पूछा," वह समस्या क्या है शास्त्री जी ?"

गौरी शास्त्री ने विनम्र होकर कहा, "मेरे बच्चों में छह साल का एक लड़का भी है जो सुबह उठने के बाद शाम तक रोता ही रहता है। मेरा तो कहीं भाग जाने का मन करता है। मैं आपसे यह निवेदन करने आया हूँ कि आप मुझे इस कष्ट से मुक्त करने की कृपा करें।"

राजा श्रीदत्त कुछ इस तरह के व्यक्ति थे कि प्रजा का कोई भी व्यक्ति उनके पास अपनी छोटी-बड़ी समस्याको लेकर आजाता था। गौरी शास्त्री ने भी ऐसा किया। उसकी बातें सुनकर राजा ने सोचा कि किसी तरह से उस बच्चे को राजपंडित अनिरुद्ध के गले मढ़ दिया जाये। उन्होंने कहा, "शास्त्री जी, आप अपने पुत्र को यहाँ ले आइये। जब तक वह मेरे पास रहेगा, मैं आपको प्रतिदिन दस मुद्राएँ देता रहूँगा।"

गौरी शास्त्री यह सुनकर अत्यन्त खुश हुअ

अजयकुमार

जोर-शोर से रोने लगा । अनेक प्रयत्न करने के बाद भी अनिरुद्ध उस बच्चे को चुप नहीं करा पाया । उस दिन शंकर के रोने-धोने से अनिरुद्ध दरबार में उपस्थित नहीं हो सका । उस दिन राजा श्रीदत्त और सभी सभासदों ने बड़ी शांति से राजकार्य संपन्न किया ।

दूसरे दिन फिर वही कार्यक्रम शुरू हुआ । शंकर ने उठते ही रोना शुरू कर दिया । अनिरुद्ध क दिमाग गर्म हो उठा और उसके मन में दरबार जाने की इच्छा न हुई ।

इस प्रकार प्रतिदिन शंकर के रुदन से अनिरुद्ध की मति भ्रष्ट हो गयी और वह सप्ताह पूरा होते न होते कहीं चला गया ।

अनिरुद्ध से तो पीछा छूट गया, लेकिन इसके कुछ दिन बाद श्रीदत्त के सामने एक और समस्या पैदा हुई । शिवगिरि राज्य की उत्तर दिशा में सुंदराचल नाम का एक सुविशाल राज्य था । वहाँ प्रति वर्ष क्षत्रियोचित कला-कौशलों में प्रतियोगिताएँ होती थीं । उन में भाग लेने के लिए राजा श्रीदत्त के दो पुत्रों गौरवदत्त एवं सौरभदत्त को भी निमंत्रण मिला । राजकुमारों ने अपना कौशल अवश्य दिखाया पर वे प्रतियोगिताओं में बाजी न जीत सके । उधर सुंदराचल का युवराज प्रद्युम्नसिंह सभी प्रतियोगिता में बाजी मार ले गया । वह सर्वोपरि विजेता घोषित हुआ ।

राजकुमार गौरवदत्त एवं सौरभदत्त ने सुंदराचल के राजा प्रसेनजित पर यह आरोप लगाया कि प्रतियोगिताओं में पक्षपातपूर्ण व्यवहार

कि लड़के के रुदन से तो उसे छुटकारा मिलेगा ही, साथ ही प्रतिदिन दस मुद्राएँ भी मिलेंगी । वह दूसरे ही दिन अपने बेटे शंकर को लाया और उसे राजा श्रीदत्त को सौंप कर चला गया ।

श्रीदत्त ने अनिरुद्ध को बुलाकर कहा, "पंडित महोदय, आप मेरी एक मदद कीजिए । यह शंकर नाम का एक अनाथ बालक है । इसे आप अपने पास रख लीजिए और अपनी शिक्षा-दीक्षा से इसे पांडित्यमें अपने समकक्ष बना चाहिए !"

"महाराज, मैं इसे ऐसी शिक्षा दूँगा कि भविष्य में एक दिन आप यह कहेंगे कि पंडित अनिरुद्ध का शिष्य पांडित्य में उनसे कहीं आगे निकल गया है ।" यह कहकर पंडित अनिरुद्ध गौरी शास्त्री के पुत्र शंकर को अपने घर ले गया ।

दूसरे दिन सुबह नींद से जागते ही शंकर

किया गया है और राजा ने अन्य प्रतियोगियों को धोखा दिया है। शिवगिरि के राजकुमारों की यह टिप्पणी सुनकर सुंदराचल के राजा प्रसेनजित आग बबूला हो उठे और उन्होंने शिवगिरि राज्य पर युद्ध की घोषणा कर दी।

राजा श्रीदत्त के सामने बड़ी भारी समस्या आ खड़ी हुई। वे इस बात पर गंभीरतापूर्वक विचार करने लगे कि इस ख़तरे को कैसे टाला जाये? सुंदराचल राज्य शिवगिरि राज्य की तुलना में तीन गुना अधिक बड़ा था। साथ ही वह शिवगिरि से ऊपर की तरफ़ था, इसलिए सिंचाई की सारी सुविधाएँ शिवगिरि को उसी राज्य से प्राप्त होती थीं। सुंदराचल जैसे संपन्न और शक्तिशाली राज्य के साथ युद्ध करने का तात्पर्य था युद्ध में पराजित होना और जंगलों की शरण लेना।

राजा श्रीदत्ता ने राजसभा बुलायी और राज्य के सभी प्रमुख व्यक्तियों को युद्ध की समस्या पर मंत्रणा के लिए निमंत्रित किया। सभी लोग अपनी-अपनी सलाह देने लगे।

यह ख़बर गौरी शास्त्री के कानों में भी पड़ी वह राजा श्रीदत्त के पास आया और उनसे भेंट की

राजा श्रीदत्त ने गौरी शास्त्री के कहा, "शास्त्री जी, आपकी मदद से मैंने दो पीढ़ियों से चली आयी मुसीबत अनिरुद्ध से छुटकारा पाया। अब मेरे सामने युद्ध की जटिल समस्या है।"

"महाराज, मुझे यह कोई भारी और जटिल समस्या प्रतीत नहीं होती। अगर मैं आपको सच बताऊँ तो ऐसी समस्या तो छोटे पैमाने पर रोज़ मेरे

सामने उपस्थित होती है। बिना किसी की सहायता से मैं स्वयं उसे हल करता आ रहा हूँ।" गौरी शास्त्री ने उत्तर दिया।

"आप कैसे हल करते हैं?" श्रीदत्त राजा ने पूछा।

"महाराज, मेरे बच्चे खेल-कूद में प्रतिदिन कोई न कोई झगड़ा मोल ले लेते हैं। जब दूसरे बच्चों के माँ-बाप मेरे घर के सामने आकर मुझसे झगड़ा ठानने के लिए कोलाहल मचाते हैं तो मैं न तो उत्तेजित होता हूँ और न उनके साथ झगड़ा मोल लेता हूँ। बल्कि और भी अधिक नम्र पड़कर शांति से उन्हें समझाकर सारे झगड़े ख़त्म कर देता हूँ। आपकी समस्या भी कुछ इसी प्रकार की है।" गौरीशास्त्री ने कहा।

राजा श्रीदत्त गौरीशास्त्री की बातों का मर्म

समझ गये। उन्होंने दूसरे दिन राजा प्रसेनजित के दर्शन किये और उनसे निवेदन किया, "मेरे दोनों राजकुमार अभी अबोध हैं। उनके शब्दों के लिए मैं आपसे क्षमा-याचना करता हूं। आप मेरे बड़े भाई के तुल्य हैं। मैं आपके साथ युद्ध की बात सोच भी नहीं सकता। फिर भी यदि आप हम पर आक्रमण करते हैं तो मैं आपका सामना नहीं करूँगा और अनुज के समान अपना संपूर्ण राज्य आपको सौंप दूंगां।"

राजा श्रीदत्त की नम्रता से सुंदराचल के राजा प्रसेनजित अत्यन्त प्रसन्न हुए और उन्होंने युद्ध करने का विचार त्याग दिया।

कुछ वर्ष शांति से निकल गये। अब राजा श्रीदत्त ने सोचा कि अपने दो पुत्रों में से एक का राज्य-तिलक कर वे अब विश्राम का जीवन बितायें। पर उनके दोनों पुत्र जुड़वां थे। वे समझ नहीं सके कि किसको राज्य दें ! वे दोनों राजकुमार महत्वाकांक्षी थे और राजा बनना चाहते थे।

शायद गौरी शास्त्री इस समस्या का कोई हल प्रस्तुत कर सके, यह सोचकर राजा श्रीदत्त ने गौरी शास्त्री को बुला भेजा।

गौरी शास्त्री ने सारी बात सुनकर कहा, "महाराज, राज्य के लिए आपके पुत्रों में संघर्ष की बात सुनकर मुझे मिठाई के लिए लड़नेवाले अपने बच्चों की याद आ रही है। उसके बाद मैंने यह नियम बना लिया था कि घर में मिठाई का दोना छिपाकर ले जाता था और अपने बच्चों की संख्या के अनुसार मिठाई की उतनी ही पुड़िये बना लेता था और सबको अलग-अलग पुड़िया दे देता था।"

राजा श्रीदत्त ने इस बार भी गौरीशास्त्री की बात के मर्म को समझ लिया। उन्होंने शिवगिरि राज्य को दो हिस्सों में बाँटा और दोनों राजकुमारों को दोनों राज्यों का अलग-अलग राजा बनाकर अपनी समस्या सुलझा ली।

राजा श्रीदत्त पर गौरी शास्त्री के कई उपकार हो गये थे। उन्होंने गौरीशास्त्री का सम्मान किया और उन्हें बहुमूल्य पुरस्कार एवं धनराशि देकर उसकी गरीबी को सदा के लिए दूर कर दिया।

[१८]

[ज्वाला द्वीप से उग्रदत्त ने अपने पोषक पिता उग्राक्ष के पास संदेश भेजा कि वह उसकी सहायता के लिए अपने वीर अनुचरों के साथ तुरन्त आजाये। समाचार मिलते ही वह अपने पाँच सौ राक्षस वीरों के साथ नावों पर ज्वाला द्वीप के लिए निकल पड़ा। नावें एक रात और एक दिन यात्रा करने के बाद जब समुद्र के बीच पहुँचीं, तब एक भयंकर पक्षी ने उन पर हमला किया। आगे पढ़िये !...]

भयंकर पक्षी को नावों पर मंडराते देखकर राक्षस घबरा गये। उग्राक्ष ने गरजकर कहा, 'जल्दी अपनी मशालें तेल में भिगोकर जलाओ!"

दूसरे ही पल राक्षसों के मशाल जल उठे। भयंकर पक्षी पर सवार दो-तीन लोग आसमान में ऊँचाई पर उड़ते हुए नावों पर भाले और साथ लाये हुए पत्थर बरसाने लगे। कुछ देर के लिए युद्ध की-सी स्थिति पैदा हो गयी। इसके बाद पक्षी पर सवार बाघचर्मधारी पक्षी को बड़ी तीव्र गति से नीचे की ओर लाये, मानो नावों पर गिर पड़ना चाहते हों, फिर अट्टहास करके ऊपर की ओर उड़ गये और ज्वाला द्वीप की ओर चले गये

उसके बाद दिन एवं रात के समय भी बाघचर्मधारियों ने नावों पर आक्रमण नहीं किया। राक्षस आगे बढ़ते रहे। तीसरे दिन सूर्योदय के समय नावें ज्वाला द्वीप के निकट पहुँच गयीं।

रियों के साथ भीषण युद्ध कर रहे थे। कुछ भयंकर पक्षी घाटी के छोर तक घुस आये भल्लूकचर्मधारीयों पर हमला कर रहे थे।

राक्षस नावों से उतरकर किनारे पहुँचे। राक्षसों को भल्लूकचर्मधारीयों की सहायता के लिए आया हुआ देखकर बाघचर्मधारी घबरा गये और रास्ता बनाकर द्वीप के अन्दर भागने लगे। भल्लूकचर्मधारियों का साहस अचानक बढ़ गया। वे हाथ में आये बाघचर्मधारी शत्रुओं का वध करते हुए राक्षसों के समीप पहुँचे। उन सबके आगे आरहे एक भल्लूकचर्मधारी को देखकर उग्रारक्ष चौंको पड़ा और खुशी से उछलकर बोला, "अरे, उग्रदत्त! तुमने यह क्या वेश बना रखा है?" यह कहकर उसने उसे हाथों में ऊपर उठा लिया और कंधे पर बिठा लिया।

बलशाली राक्षसों को मदद के लिए आया हुआ देखकर भल्लूकचर्मधारियों के उत्साह का ठिकाना नहीं था। अब एकपाद जैसे शत्रु से भी आसानी से निपटा जा सकेगा। उग्रदत्त ने संक्षेप में शत्रुदल की ताक़त का परिचय अपने पोषक पिता उग्रारक्ष को दिया। इसके पश्चात् भल्लूकचर्मधारियों के नेता कन्ध का परिचय कराते हुए उसने कहा, "ये कन्ध भल्लूकचर्मधारियों के नेता हैं। इन्होंने ही बाघचर्मधारियों से मेरी रक्षा की है।"

कन्ध ने उग्राक्ष को नमस्कार करके कहा, "आपका आगमन हमें पहाड़ी गुफ़ाओं एवं सुरंगों के बीच अंधकार में जीने से मुक्ति दिलायेगा।

"अभी हमें कुछ दूर तक पश्चिम दिशा में बढ़ना है। वहाँ दो प्रज्वलित अग्नि-पर्वतों के बीच एक घाटी है। हमें अपनी नावों को द्वीप के उसी भाग में लेजाना है। वहाँ किनारे पर पहुँचकर हम घाटी से होकर द्वीप के मध्य भाग में पहुँच जायेंगे।" राक्षसोंका मार्गदर्शन करने के लिए आये हुए भल्लूकचर्मधारी शम्बूक ने कहा।

शम्बूक के पथ-निर्देशन में नावें किनारे से होकर थोड़ी दूर और आगे बढ़ीं, तब उन्हें दो अग्नि-पर्वतों के बीच एक लम्बी घाटी दिखाई दी। परन्तु भल्लूकचर्मधारी ने जैसी कल्पना की थी और उग्राक्ष को बताया था, उसके अनुसार घाटी निर्जन न थी। इस समय घाटी के मुखद्वार पर अधिकार किये हुए बाघचर्मधारी भल्लूकचर्मधा-

एकपाद जैसा क्रूर और भयानक व्यक्ति न कभी हुआ और न भविष्य में होगा। एकपाद तथा उसके मित्र करवीर एंव नागवर्मा केवल गुलामों की मेहनत पर ऐश आराम करते हैं और दूसरे देशों पर आक्रमण कर जीते हैं। यदि हम सब इन तीनों का अन्त कर सकें तो तुम्हारे देश, कपिलपुर राज्य एंव ज्वाला द्वीप का कल्याण होगा।"

"तो इस कार्य में विलंब की क्या आवश्यकता है? हम तुरन्त उसके क़िले को घेर लेते हैं। बस, आप तो हमें मार्ग बताने का काम करें!" उग्राक्ष ने उग्रदत्त को अपने कंधे पर से उतारते हुए कहा।

"राक्षसराज, यह कार्य जल्दबाजी में करने का नहीं है। हमें इस पर गंभीरता से विचार करना होगा। इस समय सामन्त राजा सुदर्शन की पुत्री चंद्रलेखा शत्रु के अधीन है। राजा सुदर्शन महाराजा चित्रसेन के ही मित्र नहीं, हम सबके मित्र हैं और एक बलवान एवं न्यायप्रिय तथा वफ़ादार राजा हैं। हमें इस बात का पूरा ध्यान रखना होगा कि हमारे किसी कार्य से राजकुमारी के प्राणों पर न बन आये। इसके अतिरिक्त एक और भी समस्या सामने आगयी है। उन लोगों के पास जो कुछ कपिलपुर राज्य के बन्दी थे, वे यहाँ भाग आये हैं उन्होंने बताया है कि तुम्हारे देश का अरुद्र नाम का एक युवक शत्रुओं में मिल गया है और उनके पीछे-पीछे चलता हुआ तुम्हारे सारे भेद खोल रहा है।" कन्य ने कहा।

अरुद्र के देशद्रोही बन जाने के समाचार से उग्राक्ष बौखला उठा। उसने आँखें लाल-पीली करके हुंकार भरकर पूछा, "रुद्र कहाँ है?"

रुद्र डरता-सहमता हुआ उग्राक्ष के सामने आ खड़ा हुआ।

"अरे, रुद्र! यह अरुद्र द्रोही कैसे बन गया? वह तो तुम्हारा बड़ा भारी मित्र था न, क्या इसी तरह के लोग तुम्हारे मित्र हैं?" उग्राक्ष ने कड़क कर पूछा।

"मैं ही नहीं, उग्रदत्त भी उसका प्यारा दोस्त है। कहीं ऐसा तो नहीं कि वह राजकुमारी चंद्रलेखा के रूप पर मोहित होकर उसके साथ विवाह करने की इच्छा से शत्रु-पक्ष में मिल गया हो। उसके विश्वासघात का और कोई कारण तो मेरी समझ में नहीं आता। वैसे अरुद्र उग्रदत्त से बहुत अधिक प्रेम करता है और वफादार भी है।" रुद्र ने

घबराहटभरे स्वर में उत्तर दिया ।

"राजकुमारी चंद्रलेखा का विवाह मेरे पुत्र उग्रदत्त के साथ ही होगा । इसे कोई नहीं रोक सकता । अरुद्र तो क्या, कोई भी राजकुमारी को हथियाना चाहेगा तो मैं उसे काटकर गाड़ दूँगा ।" उग्राक्ष गरज कर बोला ।

"उग्राक्ष, यह समय शांति और धैर्य से सोचने का है । इस समय हमारा मुख्य शत्रु एकपाद है । अरुद्र का देशद्रोह इतना बड़ा ख़तरा नहीं है । पहले मेरी सारी बात सुनो! एकपाद का वध करना सरल कार्य नहीं है । मैं तुम्हें उसकी एक अद्भुत शक्ति के बारे में बताता हूँ । वह शक्ति यह है कि अगर किसी का रक्त उसकी नज़र में आजाये, तो वह व्यक्ति मर जाता है । इसके अलावा वह व्यक्ति भी मर जाता है जो उसका खून देख ले ।" कन्ध ने कुछ हताशभरे स्वर में कहा ।

कन्ध की बातों को न समझने के कारण उगारक्ष का क्रुद्धभाव ज्यों का त्यों बना रहा । उसके सामने इस समय अरुद्र का विश्वासघात ही प्रमुख था । पर जब कन्ध की बातों का मर्म उसके अन्दर घुसा तो वह सचेत हुआ । उसने आश्चर्य से पूछा, "नायक कन्ध, मैंने ऐसा कहीं नहीं सुना । यह तो बड़ा कठिन काम है कि एकपाद का खून भी न गिरे और उसका वध भी कर दिया जाये ।"

"उग्राक्ष, हम लोगों में से कुछ को मरने के लिए सिर पर कफ़न बांधना होगा । पहाड़ की चोटी पर बने उसके किले में घुसना कोई बड़ी बात नहीं है । हमारे पास भी कुछ भयंकर पक्षी हैं जो हमारे शत्रुओं के भयंकर पक्षियों का सामना कर सकते हैं । तुम्हारे अनुचरों में एक-एक राक्षस की यह सामर्थ्य है कि वह सौ बाघचर्मधारियों को मुठ्ठी में दाबकर मसल दे । लेकिन हमारे लिए असली ख़तरा उस समय है, जब हम क़िले पर अधिकार करके एकपाद को बन्दी बनाने का प्रयत्न करेंगे । अगर एकपाद अपनी देह पर कुछ घाव बनाकर हमारे सामने आने में सफल होगया तो हम जीवित वहाँ से नहीं लौट सकते ।" कन्ध ने कहा ।

"क्या वह अत्यन्त शक्तिशाली भी है?" उग्राक्ष ने पूछा ।

"शक्तिशाली? नहीं वह तो एकदम दुर्बल है । साथ ही वह लंगड़ा भी है । यदि वह हाथ में

आजाये तो दस वर्ष की आयु का लड़का भी उसे क़िले की दीवार पर से नीचे लुढ़का सकता है।" कन्ध ने कहा।

"कन्ध, मेरे राक्षस अनुचर बहुत स्वामीभक्त हैं। वे मेरे लिए प्राण देने में हिचकिचायेंगे नहीं। पहले हम उसके क़िले में घुसते हैं। इसके बाद हम एकपाद की खोज करेंगे। कुछ लोग आगे चलेंगे, और हम सब लोग आँखें बन्द कर उनके पीछे चलेंगे। इसके बाद हम एकपाद को घेरकर आँखें बन्द किये-किये ही उसका संहार करेंगे।" उग्राक्ष ने अपनी योजना बतायी।

"यह तो ठीक है! पर हम कब तक आंखें बन्द किये रहेंगे ? आंखें खोलने पर तो हमें उसका खून दिखाई देगा न?" कन्ध ने कहा।

"यह समस्या काफ़ी जटिल है। पर उसका समाधान हमें उसी मौक़े पर करना होगा। जितना अधिक सोचेंगे, समस्या उतनी ही जटिल होती जायेगी। बेहतर होगा कि समय के अनुसार तत्काल बुद्धि से निर्णय लिया जाये। पहले उसका वध किया जाये, फिर जो होगा, देख लिया जायेगा। सबसे पहले हमें उसके क़िले की ओर बढ़ना चाहिए।" यह कहकर उग्राक्ष ने आगे की ओर तेजी से अपने कदम बढ़ाये।

भल्लूकचर्मधारियों के मार्ग-निर्देशन में सब लोग कुछ दूर तक चले। उसके बाद वे बायीं ओर स्थित पहाड़ी तलहटी में ऊबड़-खाबड़ शिलाओं पर चढ़ते हुए चोटी पर निर्मित किले की ओर बढ़े। आसमान में न किसी भयंकर पक्षी की

छाया थी और न पहाड़ पर किसी बाघचर्मधारी का कोलाहल था। बल्कि चारों तरफ नीरवता थी

"एकपाद ने अवश्य कोई षडयंत्र रचा है। हो सकता है, क़िले के ऊपर वह अचानक रक्त निकालकर सामने आये, ताकि हम सब एकसाथ मर जायें।" कन्ध ने कहा।

"आप सब ध्यान से सुनो। केवल आगेवाली पंक्ति के वीरों को छोड़ अन्य कोई भी क़िले की तरफ आँखें न उठाये।" उग्रदत्त ने चिल्लाकर चेतावनी दी।

इस प्रकार योजना बद्ध रूप से जब सारा समुदाय क़िले की दीवारों के पास पहुँचा, तब उन्हें अचानक कोलाहल सुनाई दिया। फिर भी किसी ने सिर ऊपर नहीं उठाया। सबको इस बात का ख़तरा था कि उनकी क्षण भर की मामूली-सी

द्रोही नागवर्मा एवं करवीर इसी प्रदेश में कहीं ताक़ में छिपे हुए हैं ।"

दूसरे ही क्षण तलवारों की टकराहट सुनाई दी । चंद्रलेखा ने एक हाथ में तलवार ऊपर उठाकर दीवार पर से कहा, "सुनिये, जल्दी कीजिए! अरुद्र करवीर के साथ युद्ध कर रहा है । आप लोग मदद के लिए जल्दी आईये! थोड़ा-सा भी विलम्ब ख़तरनाक साबित हो सकता है । लो, देखो, यही द्रोही नागवर्मा है !" यह कहकर राजकुमारी चंद्रलेखा क़िले के अहाते में नीचे कूद पड़ी ।

उग्रदत्त एवं उग्राक्ष ने अपने अनुचरों को सावधान किया और बड़े वेग से किले की दीवार पर लटकी रस्सियों के सहारे ऊपर चढ़ गये । इसके बाद क़िले के अहाते में पहुँच कर उन्होंने देखा कि अरुद्र करवीर के साथ और चंद्रलेखा द्रोही नागवर्मा के साथ युद्ध कर रहे हैं । उग्राक्ष उस दृश्य को देख फूला न समाया और बोला, "बेटी, चंद्रलेखा, मैं आगया हूँ । तुमने अपने क्षत्रिय-कुल के गौरव में चार चांद लगा दिये । तुम्हारी होनेवाली सास कपिलपुर की महारानी ने भी एक बार बाघचर्मधारियों के साथ युद्ध किया था । वह दृश्य मैंने अपनी आँखों से प्रत्यक्ष देखा था । आज मुझे तुममें वही रूप पिखाई दे रहा है । तुम सचमुच ही क्षत्राणी हो ।" यह कहकर उग्राक्ष ने अपनी विशाल शिलागदा से नागवर्मा पर प्रहार कहना चाहा, पर इसी बीच चंद्रलेखा की तलवार नागवर्मा की छाती को पार कर गयी और वह

भूल भी उन्हें मौत के मुँह में ढकेल सकती है । कुछ ही क्षणों में एकपाद ने घंटे की चोट पर ज़ोर से कहा, "देखो, मैं सामन्त राजा की पुत्री चंद्रलेखा को ऊपर से नीचे गिरा रहा हूँ ।"

एकपाद की यह ललकार और धमकी सुनकर उग्राक्ष सहित सभी को विपदा का आभास हुआ, पर किसी ने भी सिर उठाकर ऊपर की तरफ न देखा । इतने में क़िले की दीवार पर से यह चीख सुनाई दी, "अरे धोखा है ! दगा है !"

इसके बाद अरुद्र ने चिल्लाकर क़िले पर से कहा, "उग्रदत्त, राजकुमारी चंद्रलेखा द्वारा लटकायी गयी रस्सियों के सहारे ऊपर आजाइये! मैंने एकपाद को चमड़े की थैली में बन्द कर उसका मुँह बाँध दिया है । अब आप लोगों के लिए किसी प्रकार का भय नहीं है । पर सावधान!

CHITRA

चीख कर गिर पड़ा। राक्षसों को देख करवीर ने भागने की कोशिश की पर अरुद्र ने भाले के प्रहार से उसे नीचे गिरा दिया। इसप्रकार नागवर्मा और करवीर मौत का ग्रास बन गये ।

यह सब देखकर कन्ध के उत्साह का ठिकाना न रहा । उसने चमड़े के उस थैले को ऊपर उठाया, जिसमें एकपाद बन्द था, फिर कहा, "एकपाद, क्या तुम्हें थैले के अन्दर उमस महसूस हो रही है ? मैं तुम्हें अभी उस प्रज्वलित अग्नि-पर्वत के मुँह में गिराकर तुम्हारी और जगत की व्यथा को शांत करता हूँ बस, अब कुछ ही क्षण की देर है।" यह कहकर कन्ध उस थैले को लेकर अग्नि-पर्वत की ओर दौड़ पड़ा ।

अब अरुद्र बोला, "मैंने आपका द्रोही होने का स्वांग रचा, इसलिए एकपाद ने मुझ पर विश्वास किया। एकपाद की यह योजना थी कि वह आप सबको राजकुमारी चंद्रलेखा को नीचे गिराने की सूचना देकर आप सबका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करेगा। और फिर अपने शरीर में घाव बनाकर रक्त दिखाकर आप सबको ख़त्म कर देगा। पर दुर्भाग्य से उसे यह अवसर न मिल सका। मैं भी अवसर की तलाश में था। जैसे ही उसने आप लोगों से चंद्रलेखा के गिराये जाने की बात कही, मैंने पीछे से उस पर हमला करके उसे चमड़े के थैले में बन्द कर दिया और थैले का मुँह बांध दिया ।"

अरुद्र की बुद्धिमानी की सबने एक स्वर से सराहना की ।

उग्रदत्त, उग्राक्ष एवं चंद्रलेखा सकुशल अपने-अपने देश लौटे । सबकों सकुशल देख-जानकर राजा चित्रसेन तथा सामन्त राजा सुदर्शन की खुशी का ठिकाना न रहा। शुभ मुहूर्त में उग्रदत्त एंव राजकुमारी चंद्रलेखा का विवाह धूमधाम से संपन्न हुआ ।

कन्ध भी बहुमूल्य उपहार लेकर उस विवाह में शामिल होने के लिए कपिलपुर पहुँचा ।

उग्रदत्त अपने श्वसुर के सामन्त राज्य एवं अपने पोषक पिता उग्राक्ष के अरण्य राज्य का राजा बना और महारानी चंद्रलेखा के साथ सुखपुर्वक निवास करता हुआ प्रजा का लोकप्रिय राजा प्रमाणित हुआ ।

राजा एवं संन्यासी

दृढ़व्रती विक्रमार्क पेड़ के पास पुनः लौट आये, पेड़ पर से शव उतार कर कंधे पर डाला और सदा की भाँति चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगे। तब शव में वास करनेवाले बेताल ने पूछा, "राजन, मैं नहीं जानता कि आप इस मध्यरात्रि में ऐसी प्राणघातक स्थितियों के बीच इतने कठिन कार्य में प्रवृत्त क्यों हुए हैं? कहीं आप भी तो मन की किसी चंचल भावना का शिकार नहीं होगये? मैं आपको नीलसागर राज्य के राजकुमार शिवदत्त की कहानी सुनाता हूँ। श्रम को भुलाने के लिए सुनिये।"

बेताल कहानी सुनाने लगा: अत्यन्त समृद्ध नीलसागर राज्य पर राजा अग्निदत्त का राज्य था। उनके दो पुत्र थे। शिवदत्त बड़ा था और शांतिदत्त छोटा। दोनों भाई क्षत्रियोचित समस्त विद्याओं में पारंगत थे। स्वभाव में बड़ा राजकुमार शिवदत्त अधिक विनयी एवं दयालु था। इसलिए राजपरिवार एंव प्रजाओं में भी शिवदत्त को विशेष

बेताल कथा

प्रेम प्राप्त था। राजा अग्निदत्त को अपने दोनों पुत्र प्रिय थे, पर शिवदत्त पर उन्हें गर्व था। वे चाहते थे कि शिवदत्त राजनीति में कुशल बने, ताकि भविष्य में सफल शासक बन सके। किन्तु शिवदत्त के मन में कुछ और ही था। वह अपना सारा समय वेद, उपनिषद, पुराणों आदि के पठन पाठन में तथा भगवान के ध्यान में बिताया करता था।

कुछ वर्ष बाद राजा अग्निदत्त ने शिवदत्त को युवराज पद देना चाहा। उनकी हार्दिक इच्छा थी कि बड़ा राजकुमार अब राजकार्यों में अधिकारपूर्वक सहयोग दे और स्वतत्र निर्णयों को लेने का उत्तरदायित्व वहन करे। महाराज अग्निदत्त शिवदत्त को युवराज पद देने की शीघ्रता इसलिए भी दिखा रहे थे, क्योंकि पड़ोसी राज्य सूर्यनगर का राजा दिक्पालसिंह नीलसागर राज्य पर अधिकार करने के लिए बहुत दिनों से षडयंत्र रच रहा था।

राजा अग्निदत्त से आदेश पाकर मंत्री देवशर्मा राजकुमार शिवदत्त के पास गये और युवराज-पद से लेकर पड़ोसी राजा दिक्पालसिंह के शत्रुभाव तक का सारा वृत्तान्त राजकुमार को कह सुनाया। युवराज बनने की बात सुनकर राजकुमार को तनिक भी प्रसन्नता नहीं हुई। उसने स्पष्ट कह दिया कि इसप्रकार के शासन कार्यों में उसे थोड़ी-सी भी रुचि नहीं है।

मंत्री देवशर्मा ने कुछ विस्मित होकर कहा, "राजकुमार, सारी जनता आपको युवराज रूप में देखने के लिए लालायित है।"

"मंत्रिवर, मैं आपसे स्पष्ट कह रहा हूँ कि राज्य के लिए मेरे मन में थोड़ा भी मोह नहीं है।" शिवदत्त ने कहा।

"शत्रु को यदि यह विदित होजाये कि आपने शासन-कार्यों में सहयोग देने से इन्कार कर दिया है तो वह अपने षडयंत्र से हमें नुक़सान पहुँचा सकता है।" मंत्री देवशर्मा ने कहा।

"चाहे कुछ भी क्यों न हो, मैं इन सब समस्याओं से अपना कोई सम्बन्ध अनुभव नहीं करता। मेरा परामर्श है कि मेरे छोटे भाई शांतिदत्त को युवराज-पद दे दिया जाये!" राजकुमार शिवदत्त ने कहा।

मंत्री देवशर्मा ने राजकुमार के साथ हुई सारी

वार्ता को राजा अग्निदत्त को सुना दिया। राजा को विस्मय के साथ-साथ दुख भी हुआ। उन्होंने शिवदत्त को बुलाकर कहा, "बेटा, तुम युवराज बने बिना शासन-कार्यों में पूरे अधिकार के साथ मुझे सहयोग नहीं दे सकते। तुम मेरे ज्येष्ठ पुत्र हो। तुम्हारा उत्तरदायित्व बहुत बड़ा है। दूसरी बात यह है कि एक राजा के रूप में युवराज-पद देने का अधिकार मेरा है। इस पद के लिए मैंने तुम्हें चुना है। अभिषेक के लिए अनेक आयोजन आरंभ हो चुके हैं। तुम अब अस्वीकार नहीं कर सकते। जाओ, तैयारी करो!"

शिवदत्त पिता की बातें सुनकर मौन बना रहा। राजकुमार के मौन को सबने स्वीकृति समझा। किन्तु अगले दिन प्रातःकाल एक विचित्र घटना हुई। राजकुमार शिवदत्त राजमहल में कहीं नहीं थे। राजा अग्निदत्त चिंतामग्न होगये। सेवकों और सैनिकों के द्वारा सर्वत्र शिवदत्त की खोज कराई गयी। सबने राजमहल के पीछे के उद्यान, पर्वत शिखर, नदी-तट आदि सब स्थानों को छान मारा, राजमहल के विशाल पुस्तकालय का कोना-कोना ढूंढ़ लिया गया, किन्तु राजकुमार का कहीं पता न लगा।

इसके बाद राजा ने गुप्तचरों के द्वारा देश के कोने-कोने में राजकुमार शिवदत्त की खोज करायी, पर कोई परिणाम न निकला। राजा की व्याकुलता का ठिकाना न रहा। रानी ने अतिशय दुख के कारण अन्न-जल त्याग दिया।

कुछ दिन बाद भिखारी-सा दिखनेवाला एक मनुष्य शिवदत्त का एक पत्र लेकर आया। शिवदत्त ने वह पत्र अपने माता-पिता के नाम
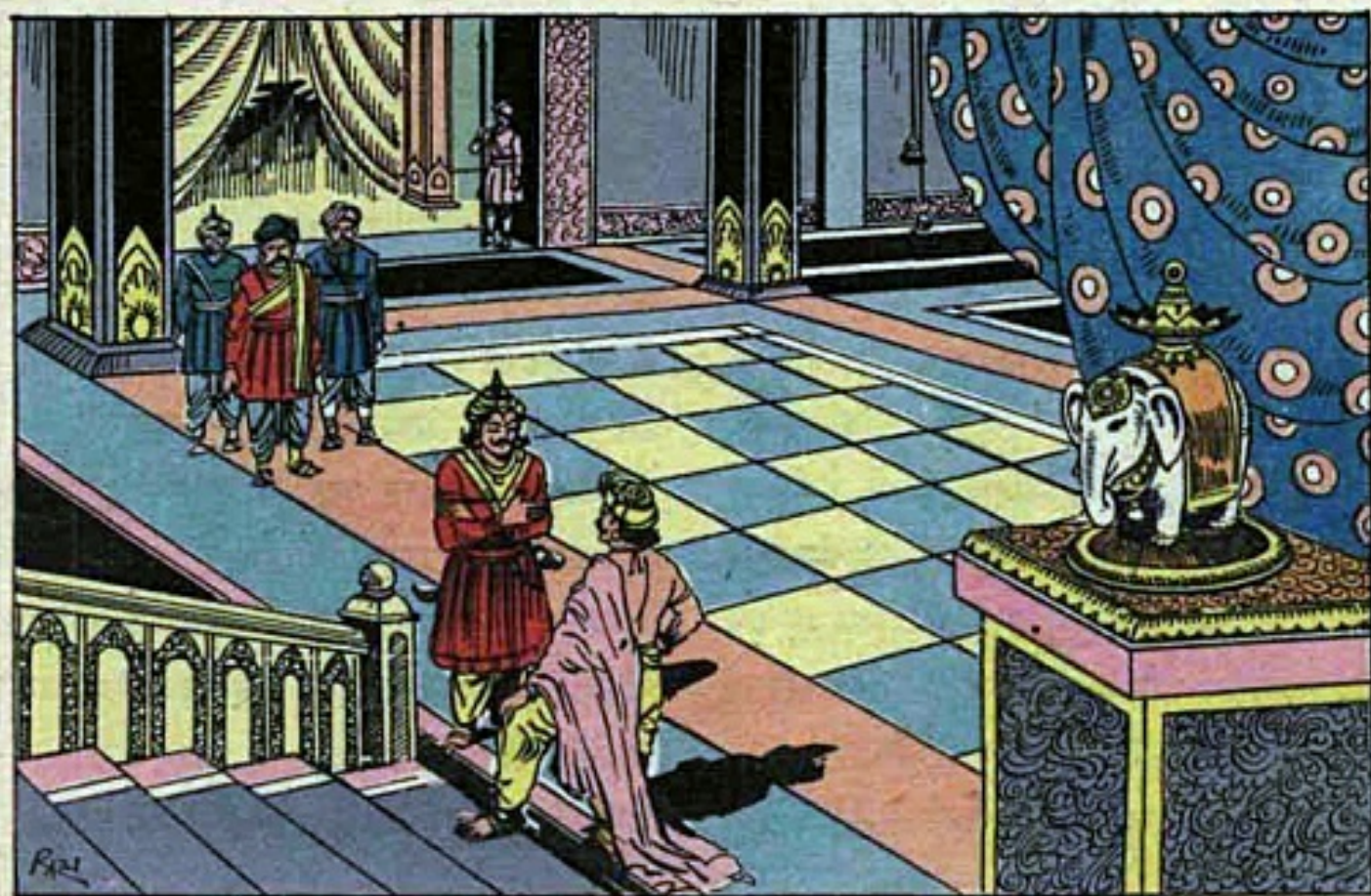
लिखा था। पत्र इसप्रकार था—"राजकुमार के रूप में मैं जानता हूँ कि मेरा दायित्व क्या है? पर इससे अधिक महत्वपूर्ण बात तो यह है कि अंतरात्मा की पुकार का उल्लंघन नहीं होना चाहिए। इसलिए मैंने माता-पिता, बन्धु-बांधव, मित्र-परिजनों का परित्याग कर संन्यास ग्रहण किया है। भगवद्प्राप्ति ही मेरा लक्ष्य है। आपके प्रति मैं अपना कर्तव्य पूर्ण नहीं कर सका, इसके लिए आपसे क्षमा-याचना करता हूँ।"

इस पत्र से महाराज अग्निदत्त और महारानी कीर्तिबाला को अत्यन्त दुख हुआ। फिर भी पुत्र के सकुशल होने के समाचार ने उन्हें धीरज बंधाया और वे उसकी मंगलकामना कर एक-दूसरे को आश्वासन देने लगे।

इस घटना को भी पाँच वर्ष बीत गये। अचानक महाराज अग्निदत्त को रोग ने आ घेरा। दूसरा पुत्र शांतिदत्त शासन-कार्यों में भाग लेने लगा। ऐसी ही स्थिति में पाँच वर्ष और निकल गये। राजा अग्निदत्त मृत्यु का शिकार हो गये। राजकुमार शांतिदत्त नीलसागर राज्य के राज-सिंहासन पर आसीन हुआ।

राजा शांतिदत्त में मानवीय दृष्टि से अनेक गुण थे, पर वह समर्थ शासक न था। एक बार देश में वृष्टि न होने के कारण सर्वत्र अकाल पड़ा। शांतिदत्त में संकट का सामना करने और योजनाबद्ध रूप से उससे पार पाने की क्षमता नहीं थी। अकाल की सूचना होने के बाद भी उसने पड़ोसी देशों से कोई सम्पर्क नहीं किया और न तो अनाज ही मँगवाया। परिणामस्वरूप देश के अपने अनाज-भंडार शीघ्र ही ख़ाली होगये और सर्वत्र हाहाकार मच गया।

पड़ोसी सूर्यनगर का राजा दिक्पालसिंह बरसों से ऐसे ही मौक़े की तलाश में था। उसने नीलसागर राज्य पर आक्रमण करने की तैयारियाँ आरंभ कर दीं। ऐसी विपदा के समय इस एक और आपदा का समाचार पाकर नीलसागर राज्य की प्रजा में खलबली मच गयी। राजा शांतिदत्त भी अकस्मात् रोगग्रस्त होगया।

राजमाता कीर्तिबाला चिंता में डूब गयी। ऐसी परिस्थिति में मंत्री देवशर्मा ने राजमाता को सुझाव दिया "राजमाता, इस विपदा के समय राज्य को विनाश से बचाने वाला केवल एक व्यक्ति

है—महामुनि अद्भुतेश्वर । शायद उनका नाम आपने सुना भी होगा । यदि उनका आशीर्वाद प्राप्त हो जाये, तो सारे कार्य सफल होजायें ।"

राजमाता कीर्तिबाला ने महामुनि अद्भुतेश्वर स्वामी के बारे में कुछ प्रभावोत्पादक चर्चाएं अवश्य सुनी थीं । कभी किसी ने बताया था कि कुछ वर्ष पूर्व कुछ लकड़हारे चन्दनवृक्ष की खोज में बन में बहुत दूर निकल गये । वहाँ उन्होंने एक चन्दनवृक्ष के नीचे दीमकों की बनायी एक बांबी देखी । उस वृक्ष को जड़सहित निकालने के प्रयत्न में उन लोगों ने बांबी को तोड़ा । तब उस बांबी से एक महात्मा बाहर आये । इस अद्भुत दृश्य को देखकर लकड़हारों के आश्चर्य का ठिकाना न रहा और उन्होंने उन महात्मा का नाम अद्भुतेश्वर स्वामी रखा । इसके पश्चात् अद्भुतेश्वर स्वामी ने जिस स्थान पर निवास किया, वहाँ धीरे-धीरे एक आश्रम बन गया । लोग उनके दर्शनों को आने लगे और उनसे आशीर्वाद प्राप्त कर संसार के अनेक रोग शोकों से छुटकारा पाने लगे ।

राजामाता कीर्तिबाला महामंत्री देवशर्मा के साथ अभी विचार विमर्श कर ही रही थीं कि इस बीच गुप्तचरों ने आकर संदेश दिया कि शत्रुसेना नीलसागर राज्य की ओर बढ़ी चली आरही है । राजमाता ने स्वामी अद्भुतेश्वर के दर्शनों का तत्काल प्रबन्ध किया, और राजमहल से निकलकर उनके आश्रम में पहुँचीं । राजमाता ने उनके दर्शन कर अश्रुभरे नयनों से निवेदन किया "महामुनि, आपके अलावा अन्य कोई भी नीलसागर राज्य की रक्षा नहीं कर सकता । आप हमारी सहायता कीजिए ! देश को विपदा-मुक्त
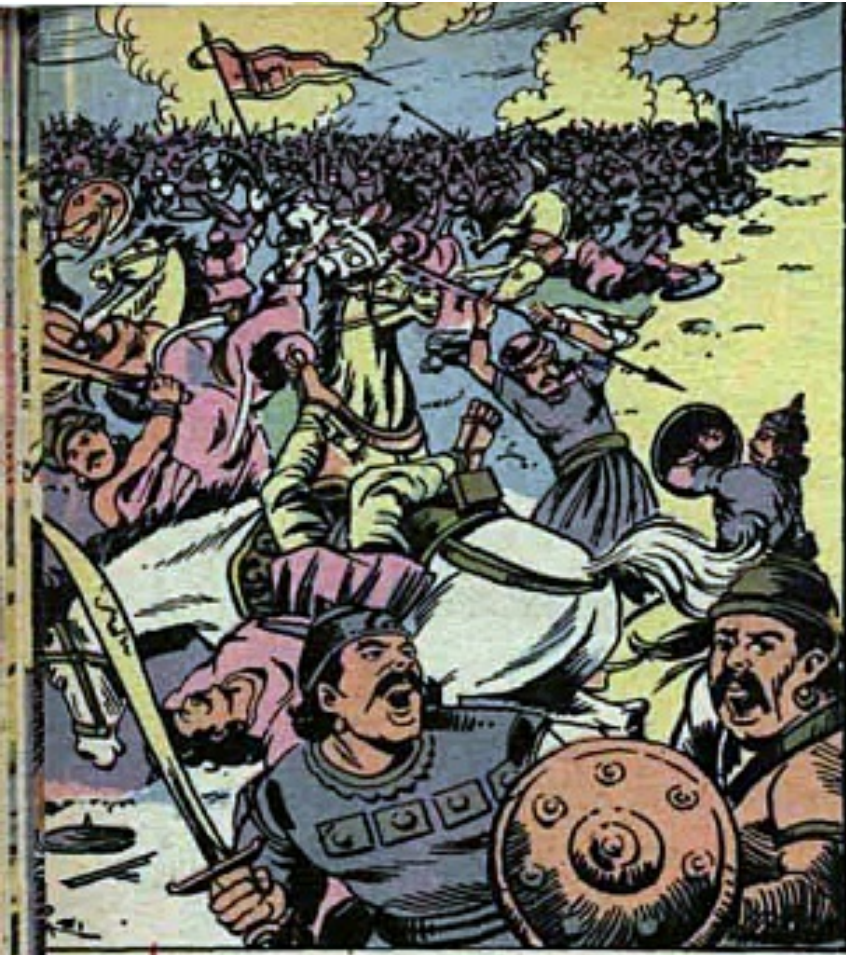
कीजिए ।"

अद्भुतेश्वर स्वामी ने कुछ क्षणों के लिए आंखें मूंद लीं, फिर आंखें खोलकर राजमाता से कहा, "माताजी, आप भयभीत न हों । आपको और राज्य को कोई हानि नहीं पहुँचा सकता । सारी विपदाएं टल जायेंगी ।"

इसके पश्चात् महामुनि अद्भुतेश्वर राजधानी में आये । उन्होंने सेनाओं को सम्बोधित कर उनमें उत्साह और साहस भर दिया । सेनाएं प्राण देकर भी देश की रक्षा के लिए सन्नद्ध होगयीं । फिर वे राजा शांतिदत्त से बोले, "तुम्हें कोई रोग नहीं है । उठ खड़े होओ ! सर्वत्र तुम्हारा कल्याण होगा ।"

दूसरे ही क्षण राजा शांतिदत्त मुस्कराता हुआ पलंग से उठ खड़ा हुआ । उसने अपने सेनापतियों को युद्ध संचालन के निर्देश दिये और अन्य राजकार्यों को भी बड़ी तत्परता और कुशलता से पूरा किया ।

नीलसागर राज्य की सेना सीमा पर घिरी आरही शत्रुसेना पर टुट पड़ी । नीलसागर के सैनिकों का साहस एवं पराक्रम देखते ही बनता था । शत्रुसेना टिक नहीं सकी और उसे भयानक पराजय का मुँह देखना पड़ा । सूर्यनगर राज्य को नीलसागर राज्य में मिला लिया गया । राज्य भर में सर्वत्र आनन्द एवं हर्षोल्लास छा गया ।

इसके बाद महामुनि अद्भुतेश्वर एकान्त में राजमाता से मिले और उन्हें साष्टांग प्रणाम करके बोले, "माताजी, अब मुझे यहाँ से जाने की आज्ञा देंगी क्या ?"

राजमाता की आँखें आनन्दाश्रुओं से भर गयीं । उन्होंने मंदस्मित के साथ महामुनि के मस्तक को चूम लिया और कहा, "तुम जैसे पुत्र को जन्म देकर मैं भाग्यशालिनी माँ बनी । तुमने अपना कर्त्तव्य पूरा किया है ।"

उसी रात महामुनि अद्भुतेश्वर अपने आश्रम को लौट गये ।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा, "राजन, यह तो स्पष्ट हो ही जाता है कि महामुनि अद्भुतेश्वर और कोई नहीं, बड़ा राजकुमार शिवदत्त है । पर मेरे मन में कुछ शंकाएं उठ रही हैं । उन्होंने अपनी माता के अनुरोध पर न केवल

राज्य की रक्षा के लिए आवश्यक प्रबंध किया, बल्कि मुनि होकर भी पुत्रवत् राजमाता के चरणों में प्रणाम किया और जाने की अनुमति माँगी। कुछ काल पहले उन्होंने अपने पत्र में यह स्पष्ट कहा था कि वे माता-पिता बन्धु-बान्धव एवं मित्र-परिजनों का परित्याग कर संन्यास ग्रहण कर रहे हैं। अब वही व्यक्ति राज्य की रक्षा के लिए प्रवृत्त हो जाता है और सूर्यनगर राज्य को नीलसागर राज्य में मिला देने पर आपत्ति भी नहीं करता। एक संन्यासी के लिए क्या यह उचित है? इस संदेह का समाधान यदि आप जानकर भी न करेंगे तो आपका सिर फूटकर टुकड़े-टुकड़े हो जायेगा।"

तब विक्रमार्क ने उत्तर दिया, "यह बात सत्य है कि यदि कोई व्यक्ति अपनी अंतरात्मा की पुकार सुनकर उसका अनुसरण करता है और संसार त्याग कर संन्यास दीक्षा लेता है, तो उसे समाजिक सुख-दुख में आबद्ध नहीं होना चाहिए। पर हर धर्म और शास्त्र में जन्मदात्री माता का ऋण सबसे बड़ा माना गया है। मनुष्य गृहस्थ हो या गृह-त्यागी, वह माता के प्रति किसी ऋण से अवश्य बंधा है। माता कीर्तिबाला को सहायता के लिए प्रार्थी देख अद्भुतेश्वर स्वामी भी न रुक सके और उन्होंने उस पर छाये संकट को दूर किया। कर्त्तव्य पूरा करने के बाद उन्होंने पुत्र के विनम्र भाव से माता से जाने की आज्ञा भी माँगी। ये सब एक मुनि के उत्तम आचरण हैं। वे अपनी असाधारण शक्तियों के बल पर एक राजपरिवार, देश एवं प्रजा की रक्षा करते हैं। ऐसे अनेक उपकार-कार्य वे आश्रम में निवास करते हुए भी कर रहे हैं। अब रही सूर्यनगर के नीलसागर राज्य में विलयन की बात। मुनि अद्भुतेश्वर राजनीति में न होकर भी राजनीति के ज्ञानी हैं। भविष्य की शांति के लिए यह आवश्यक है कि अकारण ही आक्रमण करनेवाले और शत्रुता दिखानेवाले राज्य को विलयन द्वारा सदा के लिए नष्ट कर दिया जाये।"

राजा के इस प्रकार मौन होते ही बेताल शव के साथ अदृश्य होकर पुनः पेड़ पर जा बैठा।

(कल्पित)

विदूषक

एक बार विशाख देश के राजा शूरसेन ने अपने दरबारियों को सम्बोधित कर पूछा, "इस जगत के समस्त प्राणियों में सबसे अधिक तेज़ गति वाला प्राणी कौन-सा है?"

सभासदों ने अपनी समझ के अनुसार अनेक प्रकार के उत्तर दिये, लेकिन राजा को उनसे संतुष्टि नहीं हुई।

तब विदूषक मोदकप्रिय ने उठकर कहा, "महाराज, मैं अपनी जानकारी के आधार पर यह कह सकता हूँ कि मुझसे बढ़कर तेज़ गति से दौड़नेवाला प्राणी इस संपूर्ण विश्व में नहीं है। एक बार मैंने दौड़ते हुए एक हिरण, एक खरगोश एवं एक घोड़े को पीछे छोड़ दिया था।"

राजा शूरसेन अपने प्रश्न का सच्चा और गंभीर उत्तर चाहते थे। इस समय उन्हें विदूषक का हास्य-विनोद पसन्द नहीं आया। उन्होंने क्रुद्ध होकर कहा, "मोदकप्रिय, इस समय मैं चतुराई नहीं, वास्तविक उत्तर चाहता हूँ।"

"महाराज, मेरा उत्तर सही है। उस समय मेरे इतनी तेज़ गति से दौड़ने के पीछे एक कारण है। उस समय एक पागल कुत्ता मेरा पीछा कर रहा था।" विदूषक ने उत्तर दिया।

विदूषक के इस उत्तर से राजा शूरसेन एवं अन्य सारे सभासद् ठहाका मारकर हँस पड़े।

इसके पश्चात् विदूषक मोदकप्रिय ने अत्यन्त विनम्रतापूर्वक पुनः कहा, "इस जगत में प्रत्येक प्राणी की स्वाभाविक गति अलग है और कायरता के कारण प्राप्त होने वाली गति अलग है। मैं कायरता के कारण पागल कुत्ते से डरकर इतनी तेज़ गति से भाग सका था। महाराजा इस तथ्य को इसलिए स्वीकार नहीं कर सके, क्योंकि वे नहीं जानते कि कायरता किस चिड़िया का नाम है।"

विदूषक के इस प्रशंसा वाक्य पर सारे सभासदों ने हर्षध्वनि की। राजा ने मुस्कराकर विदूषक को मूल्यवान पुरस्कार प्रदान किया।

बच्चों के लिए चन्दामामा की मनोरंजक प्रतियोगिता

३ आकर्षक भागों में !

प्रतियोगिता १	प्रतियोगिता २	प्रतियोगिता ३
भारत के महान सम्राट	भारत की महान रानियाँ	भारत के महान दम्पति

१,३०,००० रु० से अधिक मूल्य के पुरस्कार जीतिये !

११ भाषाओं में से हर भाषा में हर प्रतियोगिता के लिए बड़े-बड़े पुरस्कार

११ प्रथम पुरस्कार : २००० रु० की छात्रवृत्ति
११ द्वितीय पुरस्कार : १००० रु० की छात्रवृत्ति
११ तृतीय पुरस्कार : ५०० रु० की छात्रवृत्ति

साथ में बम्पर पुरस्कार

पहला बम्पर : १०००० रु० की छात्रवृत्ति *
दूसरा बम्पर : ५००० रु० की छात्रवृत्ति *
तीसरा बम्पर : २५०० रु० की छात्रवृत्ति *

* ५ वर्ष की अवधि म ५ समान किश्तों में

२२० सांत्वना पुरस्कार—एक वर्ष के लिए निःशुल्क चन्दामामा

कैसे भाग लें

अपनी इतिहास की पुस्तकें और चन्दमामा के पुराने अंक निकालिये और सारे परिवार को एकत्रित कर शुरू कीजिए!
साथ में छपे चित्र भारत के इतिहास और पुराणों के प्रसिद्ध जोड़ों के चित्र हैं। उन्हें पहचानने के लिए चित्रों में सुराग़ों को
तलाश कीजिए और तब खाने में उचित अंक को लिख भर दीजिए।
आगे, छह प्रदर्शित जोड़ों में से किसी एक को चुनिये, रिक्त स्थान को भरकर अगले पत्रे में वाक्य को पूरा कीजिए
"मैं ...... की कहानी का सबसे अधिक प्रशंसक हूँ क्योंकि ......" स्वरचित १५ शब्दों से अधिक का उपयोग मत कीजिए।
अपने उत्तर को सचमुच रोचक बनाइये—याद रखिए श्रेष्ठतम जवाबों को ही पुरस्कार मिलेगा।
अपना नाम, पता और आयु भरिए, अपना पत्रा काटिए और अपनी प्रविष्टि हमें डाक से भेज दीजिए।
और जब आप परिणामों की प्रतीक्षा कर रहे होंगे, आपको चन्दमामा के आगामी अंक में बम्पर पुरस्कार प्रतियोगिता के बारे में जानने को मिलेगा।

प्रतियोगिता के नियम

१. यह प्रतियोगिता १६ वर्ष की आयु तक के सभी बालकों के लिए है। एक बालक कितनी भी प्रविष्टियाँ भेज सकता है, किंतु वह चन्दमामा में मुद्रित प्रवेश-पत्र पर ही होनी चाहिए।

२. कोई भी बालक तीनों प्रतियोगिताओं (भारत के महान सम्राट, भारत की महान रानियाँ, भारत के महान दम्पति) में से एक या सभी प्रतियोगिताओं में भाग ले सकता है और पुरस्कार जीत सकता है। वह बम्पर पुरस्कार को भी आजमा सकता है।

३. प्रविष्टियाँ सुपाठ्य रूप से भरी जानी चाहिए और वे ११ भाषाओं में से किसी भी भाषा में हो सकती हैं जिनमें चन्दमामा प्रकाशित होता है।

४. प्रतियोगिता ३ के लिए प्रविष्टियाँ ३१ दिसम्बर १९८० से पहले हमारे पास पहुँच जानी चाहिए।

५. प्रविष्टियों के विलम्ब के लिए, उनके खोने और नष्ट होजाने के लिए प्रबन्धक उत्तरदायी नहीं होंगे।

६. प्रविष्टियाँ साधारण डाक से ही भेजी जानी चाहिए।

७. प्रतियोगिता चन्दमामा प्रकाशन, हिन्दुस्तान थॉमसन एसोसिएट में सेवारत और उनके परिवार के सदस्यों के अलावा सभी भारतीय नागरिकों के लिए खुली है।

८. प्रविष्टियों का निर्णय एक स्वतंत्र निर्णायक समिति के द्वारा होगा, जिसका निर्णय अंतिम माना जायेगा। किसी भी पत्राचार पर विचार नहीं किया जायेगा।

९. चन्दमामा में विजेताओं की घोषणा होगी और उन्हें व्यक्तिगत रूप से भी डाक द्वारा सूचना दी जायेगी।

आवश्यक : बम्पर पुरस्कार विभाग

अपनी प्रविष्टि भेजने से पहले अपने प्रवेश-पत्र से 'चन्दमामा प्रतियोगिता ३' अंकित लेबल को सावधानी से काटकर सुरक्षित रखिये। प्रतियोगिता १ और २ के साथ भी ऐसा ही कीजिए। ये तीनों लेबल बम्पर विभाग प्रवेश-पत्र (दिसम्बर अंक में प्राप्य) पर चिपकाने होंगे। बम्पर पुरस्कार के लिए इन तीनों लेबल से युक्त प्रविष्टियों पर ही विचार किया जायेगा।

चन्दामामा की यह प्रति सुरक्षित रखिये। बम्पर विभाग के प्रश्न चन्दामामा के सितम्बर, अक्तूबर और नवम्बर अंकों पर आधारित होंगे।

नोट : प्रतियोगिता १ और २ में भाग न लेने पर भी आप प्रतियोगिता ३ में भाग ले सकते हैं।

जैसा कि उदाहरण में दिखाया गया है, इन छह जोड़ों की तस्वीरों को उनके सही नामों के साथ मिलाकर उचित अंक भर दीजिए।

लव और कुश	१	सत्यवान और सावित्री	४	शकुन्तला और दुष्यन्त	७
राधा और कृष्ण	२	अकबर और बीरबल	५	राम और लक्ष्मण	८
राणप्रताप और चेतक	३	नल और दमयन्ती	६	विष्णु और गरुड़	९

बम्पर पुरस्कार के लिए यह लेबल सुरक्षित रखिये

जब आप बम्पर पुरस्कार में (दिसम्बर अंक में) भाग लें, आपको इसे बम्पर विभाग के प्रवेश-पत्र पर चिपकाना होगा।

चन्दामामा
प्रतियोगिता
३

प्रतियोगिता ३ (प्रवेश पत्र)

अब, ऊपर दर्शायी गयी छह तस्वीरों में से किसी एक जोड़े को चुनिये, और 'क्योंकि' शब्द के बाद १५ अतिरिक्त शब्दों से अधिक का प्रयोग न कर इस वाक्य को पूरा कीजिए....

मैं सबसे अधिक .... की कहानी का प्रशंसक हूँ क्योंकि.............

....

....

....

....

....

आपका नाम : ....

आयु :.................... पता :...

....

इस पत्र को काटिये, चन्दामामा प्रतियोगिता ३ से अंकित कूपन को अपने पास सुरक्षित रख लीजिए और अपनी प्रविष्टि को तुरन्त इस पते पर डाक से रवाना कर दीजिए :

चन्दामामा प्रतियोगिता ३
चन्दामामा प्रकाशन
188, आर्कोट रोड
मद्रास—600 026

प्रतियोगिता ३ की अन्तिम तिथि : दिसम्बर ३१, १९८७

बम्पर पुरस्कार के लिए यह लेबल सुरक्षित रखिये

हमारे देश के स्मारक

अजन्ता-एलोरा

महाराष्ट्र के ज़िला अहमदनगर की पर्वतमालाओं में २४ गुफाएं अनुपम भित्ति-चित्रों से भारत की महान प्राचीन चित्रकला का प्रदर्शन करती हैं। अजन्ता की गुफाओं के विश्वविख्यात इन भित्ति-चित्रों को बौद्धधर्म के आदर्शों से प्रेरित कुछ चित्रकारों ने ई० पू० दो शताब्दी पहले चित्रित करना आरंभ किया था।
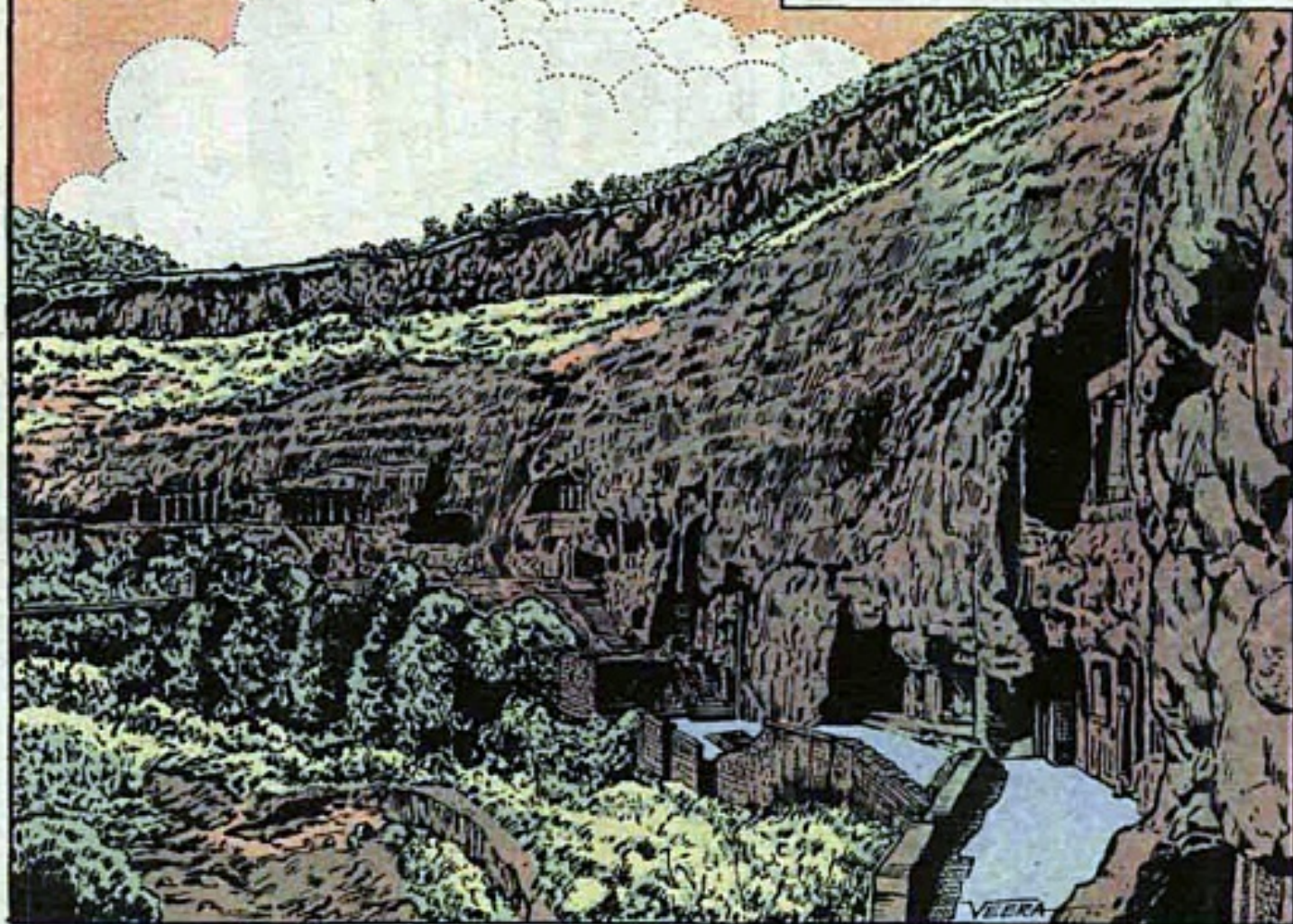
यहां की गुफ़ाओं के अधिकांश भि
त्ति-चित्र, बौद्धस्तूप एवं स्तम्भ ईसा की छठी
एवं सातवीं शताब्दियों की कलाकृतियां हैं।

यहाँ के गुफ़ा चित्र एवं शिल्प केवल बौद्धधर्म के सिद्धान्तों को ही प्रतिबिम्बत नहीं करते, बल्कि प्राचीन काल के सामाजिक जीवन का चित्र भी प्रस्तुत करते हैं। इन चित्रों में से एक चित्र में यह अंकित किया गया है कि कतिपय विदेशी एक भारतीय राजा के साथ व्यापारियों के माध्यम से अपने घोड़ों के विक्रय के बारे में बातचीत कर रहे हैं।

एक दूसरे चित्र में दिखाया गया है कि
एक राजा के समक्ष स्त्रियां संगीत-सभा का
आयोजन कर रही हैं। यह सातवीं शताब्दी
के राजकीय जीवन का सुंदर उदाहरण है।
उस समय स्त्रियां विशेष रूप से संगीत का
अभ्यास करती थीं इस तथ्य की पुष्टि में कुछ
चित्र अंकित हैं।

औरंगाबाद से ३० किलोमीटर की दूरी पर एलोरा के गुफ़ा मंदिर हैं। वहाँ बौद्ध, जैन तथा हिन्दूधर्म से सम्बन्धित लगभग ३८ मंदिर हैं। इन प्राचीन मंदिरों में कुछ मंदिर चौथी शताब्दी के हैं।
VEERA
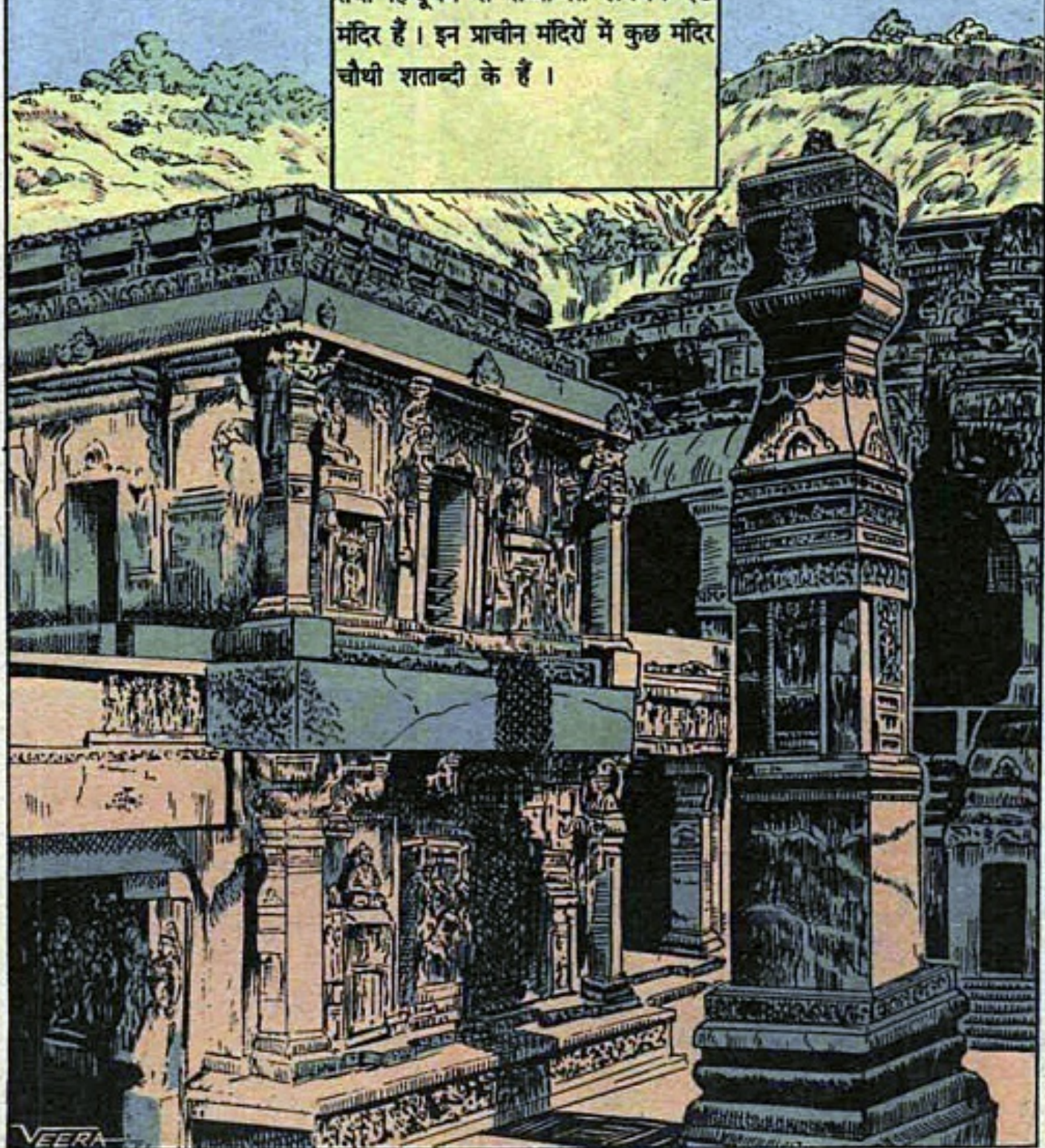
अपूर्व शिल्प प्रतिमाओं से शोभायमान कैलासनाथ मंदिर इन मंदिरों में सर्वाधिक प्रसिद्ध है। कहा जाता है कि एक ही शिला पर निर्मित इस मंदिर जैसी शिल्प कलाकृति विश्व में अन्यत्र कहीं नहीं है।

१५४ फुट चौड़ा तथा २७६ फुट लंबा यहाँ का सोलहवाँ गुफालय विश्वविख्यात है। शिव-पार्वती की लास्य-लीलाओं को प्रदर्शित करनेवाली असंख्य अनुपम शिल्पकला कृतियां यहाँ दर्शनीय हैं।

पंद्रहवीं गुफ़ा में अत्यन्त अद्भुत वामनावतार सम्बन्धी शिल्प अत्यन्त सुन्दर है। बि० सिली ने अपनी "एलोरा के आश्चर्य" शीर्षक पुस्तक में लिखा है— "एलोरा गुफ़ाओं की शिल्पकला के समकक्ष शिल्प-कला-कृतियां विश्व में और कहीं नहीं देखी जा सकतीं।"

गोल बट्टा

सैकड़ों वर्ष पूर्व बर्मा के एक गाँव में एक बुढ़िया रहा करती थी। उसके बेटे-बहू अकाल मृत्यु को प्राप्त हो चुके थे, पर रामन और सामन नाम के दो पाते थे। मरने के समय उसने दोनों पोतों को बुलाकर कहा, "बेटा, मेरे पास सोना-चांदी तो है नहीं, हाँ रसोईघर में एक सिल और एक गोल बट्टा है। बेटा रामन, तुम सिल ले लो और छोटा सामन गोलबट्टा ले ले। इन दोनों से तुम अपने दिन आराम से गुज़ारो !" यह कहकर बुढ़िया ने प्राण त्याग दिये।

"मुझे सिल का क्या करना है? क्या मैं रसोई बनाकर जिऊँ?" यह सोचकर बड़ा रामन पास के गाँव में गया और बड़ी लगन से मेहनत करता हुआ अपना समय गुज़ारने लगा। इधर छोटे भाई सामन ने सोचा, "गोल बट्टे का कोई उपयोग न होता तो इसे दादी मुझे क्यों देतीं?" यह विचार कर वह गोल बट्टे को सदा अपने पास रखता।

सामन जहाँ भी जाता, गोल बट्टे को अपने साथ ले जाता। यह देखकर गाँव वाले उस पर हँस पड़ते। सामन अपने गुज़ारे के लिए प्रतिदिन जंगल में जाता, सूखी लकड़ियाँ बीनकर गाँववालों को बेच देता और इसप्रकार अपना पेट भरता।

एक दिन सामन जंगल में लकड़ी बीन रहा था, तब एक बहुत बड़ा भेड़िया उसकी तरफ आ निकला। सामन घबराकर पास के एक वृक्ष पर चढ़ गया।

"तुम डरो मत! मैं तुम्हारी हानि करने के लिए यहाँ नहीं आया हूँ। तुम्हारे पास जो एक गोल बट्टा है, उसे कुछ देर के लिए मुझे दे दो।" भेड़िये ने कहा।

"तुम्हें गोल बट्टे से क्या काम है ?" सामन ने पूछा।

"मेरा साथी एक भेड़िया कुछ देर पहले मर

बर्मा की लोक कथा

गया है। यदि हम उस गोलबट्टे को उसके नथुनों में सुंघवा देंगे, तो वह जीवित हो जायेगा।" भेड़िया बोला।

"क्या मेरे गोलबट्टे में सचमुच ऐसी अद्भुत महिमा है?" सामन ने पूछा।

"तुम गोलबट्टा लेकर मेरे साथ चलो। तुम्हें स्वयं मालूम हो जायेगा।" भेड़िये ने कहा।

भेड़िये की बात सुनकर सामन का कुतूहल जाग उठा। वह पेड़ से उतर कर भेड़िये के साथ चल पड़ा। कुछ दूर चलने पर उसने देखा कि एक स्थान पर एक भेड़िया मरा हुआ पड़ा है। सामन ने अपना गोल बट्टा भेड़िये की नाक में सुंघाया। दूसरे ही क्षण भेड़िये में जान आगयी।

"तुम्हारे गोल बट्टे की महिमा उसकी गंध में है जब तक यह रहस्य दूसरों के लिए गुप्त रहेगा, इसकी महिमा बनी रहेगी।" भेड़िये ने सामन को बताया।

सामन गोल बट्टे के इस रहस्य से अत्यन्त प्रसन्न हुआ और अपने गाँव की ओर चल पड़ा। रास्ते में उसे एक मरा हुआ कुत्ता दिखाई दिया। उसने अपना गोलबट्टा निकालकर मृत कुत्ते के नथुनों के पास रखा। कुत्ता झट उठ खड़ा हुआ और पूंछ हिलाता हुआ सामन के पीछे चल पड़ा।

शीघ्र ही सामन की ख्याति आसपास के इलाकों में फैल गयी। वह प्राणदाता वैद्य के रूप में सबका प्रिय बन गया। किन्तु किसी को भी इस बात का आभास नहीं था कि प्राणप्रदाता सामन नहीं, बल्कि उसका गोलबट्टा है।

उन्हीं दिनों एक घटना हुई। राजा की इकलौती पुत्री का देहान्त होगया। सामान ने अपने चमत्कारी पत्थर से राजकुमारी को पुनः जीवित कर दिया। राजा ने ऐसे चमत्कारी युवक को अपना दामाद बनाने में अपना गौरव समझा और राजकुमारी का विवाह सामन के साथ बड़ी धूमधाम से संपन्न किया। सामन को राज्य का उत्तराधिकारी घोषित किया गया। राजा का जामाता और वारिस बनने के बाद भी सामन मृत व्यक्तियों को प्राण-दान देता रहा। अब उस राज्य में किसी को भी मृत्यु का भय न रहा।

एक दिन सामन के मन में एक विचार आया। उसने सोचा कि गोल बट्टे के सुँघाने से यदि मृत व्यक्ति जीवित हो सकता है, तो उसे सूंघने से

वृद्धावस्था को भी रोका जा सकता है। यह बात जानने के लिए सामन प्रतिदिन गोल बट्टे को सूंघता और राजकुमारी से भी सूंघने के लिए कहता। राजकुमारी को गोलबट्टा सूंघना भला तो न लगता, पर अपने पति को एक प्रतापी, यशस्वी वैद्य मानकर वह उसका कहना मान लेती। परिणामस्वरूप दोनों पति-पत्नी नित नवयौवन को प्राप्त कर बरसों तक वैसे ही बने रहे।

इस दंपति के सुन्दर नवयौवन को देख चंद्रमा ईर्ष्या से भर उठा। वह सामन का गोलबट्टा हड़पने की ताक में रहने लगा।

एक दिन सामन ने देखा कि उसका गोलबट्टा काई से सना पड़ा है। गोलबट्टे से काई हटाने के लिए सामन ने गोल बट्टे को धूप में रख दिया और खुद उसका पहरा देने बैठ गया।

पति को इस तरह पहरा देते देख राजकुमारी ने उसे टोका, "तुम शीघ्र ही राजा बननेवाले हो। गोलबट्टे का पहरा देने के लिए तुम्हारे पास अनेक सेवक हैं, किसी को नियुक्त कर दो।"

सामन बोला, "मैं अपने कुत्ते के अलावा अन्य किसी पर विश्वास नहीं करता।" यह कहकर उसने अपने कुत्ते को गोलबट्टे के पहरे पर बैठा दिया और स्वयं महल के अन्दर चला गया। धीरे-धीरे रात होगयी।

सुअवसर देख चंद्रमा गोलबट्टे के पास उतर आया। उसने बट्टा उठाया और भागने लगा। उस रोज़ अमावस्या थी। उस अंधेरे में कुत्ता चंद्रमा को नहीं देख पाया। पर वह गोलबट्टे की गंध से सुपरिचित था। उस गंध के सहारे कुत्ता चंद्रमा का पीछा करता गया।

बर्मा के निवासियों का विश्वास है कि वह कुत्ता आज भी चंद्रमा का पीछा कर रहा है। चंद्रग्रहण के समय वे लोग चिल्लाकर कहते हैं—"लो देखो, चंद्रमा को कुत्ते ने निगल लिया है।" और ग्रहण की समाप्ति पर बोलते हैं,—"कुत्ते ने चंद्रमा को उगल दिया है।" उनका विश्वास है कि कुत्ता एक छोटा और साधारण प्राणी है, वह चंद्रमा को पूर्ण रूप से नहीं निगल पाता।

नाई की चतुराई

स्रवन्तीपुर के राजा शेषराज को अपनी नुकीली रोबदार मूंछों पर बड़ा गर्व था। वे मूंछों पर इत्र लगाते और बड़े प्यार से उनकी देखभाल करते। एक दिन नाई मंगाराम जब राजा की दाढ़ी बना रहा था, तो बातों के बहाव में उससे एक भूल होगयी। उसने राजा की एक ओर की मूंछ थोड़ी-सी काट दी।

अपनी भूल मालूम होते ही मंगाराम नाई के होश उड़ गये। वह राजा के क्रोधी स्वभाव से भली भाँति परिचित था। राजा की मूंछों की शौकीनी उसे बख्शेगी नहीं, अवश्य ही वह उसे फाँसी पर चढ़ा देगा। पर तभी उसने अक्ल और चतुराई से काम लिया।

उसने राजा से कहा, "महाराज, राजा तो क्या, सम्राट और चक्रवर्तियों की भी यह कमज़ोरी है कि वे अपनी किसी आदत के इतने अधीन हो जाते हैं कि उससे मुक्त नहीं हो सकते।"

नाई की बात सुनकर राजा शेषराज तैश में आकर बोले "मैं किसी भी आदत के अधीन नहीं हूं, होने पर भी उससे सहज ही मुक्त हो सकता हूं।"

"महाराज, यह बात कहने जितनी सरल नहीं है। आपकी आदत है कि आप अक्सर अपनी मूंछों पर ताव देते हैं। अगर आपके मूंछें न भी हों, तब भी उन्हें संवारने या या ताव देने के लिए आपका हाथ स्वयं ही उठ जायेगा।" नाई मंगाराम ने राजा को चुनौती देते हुए कहा।

राजा शेषराज का अहंकार जाग उठा। उन्होंने ललकार कर कहा, "मेरे साथ यह बात सच नहीं है। चलो, इसी बात पर मेरी मूंछें मूंड दो।"

मंगाराम ने चैन की साँस ली और राजा की मूंछों पर उस्तरा फेर दिया।

अभी दो-चार क्षण ही बीते थे कि मूंछों पर ताव देने के लिए राजा का हाथ उठा। राजा खिलखिलाकर हँस पड़े।

इसके बाद नाई मंगाराम की बात में सच्चाई का पुट देखकर राजा शेषराज ने नाई को अपना कंठहार पुरस्कार में दिया।

मेरुपर्वत पर ब्रह्मा और महाविष्णु के आधिपत्य में देवताओं की सभा संपन्न हुई। नारद भी इस सभा में सम्मिलित हुए। सभा-विसर्जन के बाद नारद सीधे मथुरा नगरी पहुँचे। वे कंस के प्रासाद के द्वार पर पहुँचे ही थे कि प्रतिहारी उन्हें सादर महल में लिवा ले गयी।

कंस ने आगे बढ़कर नारद का स्वागत किया और अर्घ्य एंव पादोदक देकर उनकी पूजा की। कंस के आदर से नारद अत्यन्त सन्तुष्ट हुए।

तब नारद मुनि ने कंस की ओर अपनी भेदक दृष्टि डालकर कहा, "वत्स, मैं तुम्हें एक अत्यन्त महत्वपूर्ण सन्देश देने के लिए आया हूँ। तुम सदा से ही मेरे प्रिय रहे हो, तुम्हारे हित की चिन्ता करना मेरा कर्त्तव्य है। इसी बीच मैं तोर्थाटन करता हुआ मेरुपर्वत पर जा निकला था। वहाँ विशाल देव-सभा देखकर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। यह सोचकर कि वहाँ कोई गंभीर चर्चा चल रही है, मैं थोड़ी देर के लिए रुका। मैं क्या बताऊँ? तुम्हारे लिए बड़ा अमगंल है। सब देवता मिलकर तुम्हारे संहार की योजना बना रहे हैं। तुम्हारी चचेरी बहन देवकी के गर्भ से जन्म लेने वाली आठवीं सन्तान के द्वारा तुम्हारे प्राणों के लिए संकट है। देवताओं के रक्षक महाविष्णु स्वयं देवकी-पुत्र के रूप में अवतार लेनेवाले हैं। अनेक देवता भी अलग-अलग स्थानों पर जन्म लेंगे। तुम्हें अपने प्राणों की रक्षा के लिए आवश्यक प्रबन्ध कर लेना चाहिए। तुम राजा हो। साम, दाम, दंड, भेद की नीति तुम्हें स्वीकार होनी चाहिए। राजा के लिए

कुछ भी बिगाड़ नहीं होता। मैं तुम्हारा हितैषी हूँ। मेरी इच्छा है कि तुम धर्मपथ का अनुसरण करते हुए सुखपूर्वक जीवन यापन करो! बस, इसी सन्देश को तुम तक पहुँचाने के लिए मैं यहाँ आया था।" इस तरह समझाकर नारद वहाँ से चले गये।

नारद मुनि के प्रस्थान के बाद कंस ने अपने मित्रों, सेवकों की ओर देखकर अट्टहास किया, फिर बोला, "मैंने नारद के साथ अपना मैत्री सम्बन्ध इसलिए बनाकर रखा था, क्योंकि मैं सोचता था कि वह अत्यन्त बुद्धिमान है। लेकिन अब पता लग गया कि उसके अन्दर ज्ञान की कितनी कमी है। वह मुझे भयभीत करने के लिए यहाँ आया था। क्या मुझ जैसे शक्तिशाली व्यक्ति को ब्रह्मा, विष्णु या अन्य देवता डरा सकते हैं? वे मेरा कुछ बिगाड़ सकते हैं? मैं तो उन्हें कुछ समझता ही नहीं। यदि मेरा क्रोध उबल पड़ा तो मैं एक मुष्टि के प्रहार से ही समस्त दिशाओं एवं दिक्पालों को दबा सकता हूँ। चाहे सारे पहाड़ चूर्ण हो जायें, समस्त सागर सूख जायें, तो भी मैं विचलित होनेवाला नहीं हूँ। यह पृथ्वी और इस पर मानव बनकर जन्म लेने वाले देवता मेरा क्या बिगाड़ सकते हैं? वैसे भी, मैं इस पृथ्वी का स्वामी हूँ। इसके अलावा, न तो इस नारद के पैर रुकते हैं, न मुँह बन्द होता है। यह बिना बुलाये हर जगह पहुँच जाता है, जो मुँह में आता है उगल देता है। यह एक को दूसरे के प्रति भड़काकर कलह पैदा करता है और स्वयं तमाशा देखता है। ऐसे व्यक्ति की बात को गंभीरता से लेना भी अपने आपमें एक मूर्खता है। फिर भी इसकी व्यवस्था मैं कर लेता हूँ। उसका कहना है कि यदुकुल की ओर से मेरे प्राणों के लिए खतरा है। इसलिए अरिष्ट, केशिप्रलंब(?), धेनुक, पूतना, कालिन्य(?) आदि को सतर्क होकर मेरे शत्रुओं का संहार करना होगा। समस्त नवजात शिशुओं की हत्या से लेकर गर्भस्थ शिशुओं तक को नष्ट कर देना चाहिए। मेरे रहते हुए, मेरे सेवकों को किसी से भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है। तुम्हारी रक्षा के लिए मैं हूँ। सब स्वेच्छापूर्वक संचार करो।"

इसके पश्चात् कंस ने सभा विसर्जित की और अपने महल में विश्वसनीय मित्रों की एक गुप्त सभा बुलायी। इसके बाद उसने आदेश दिये,
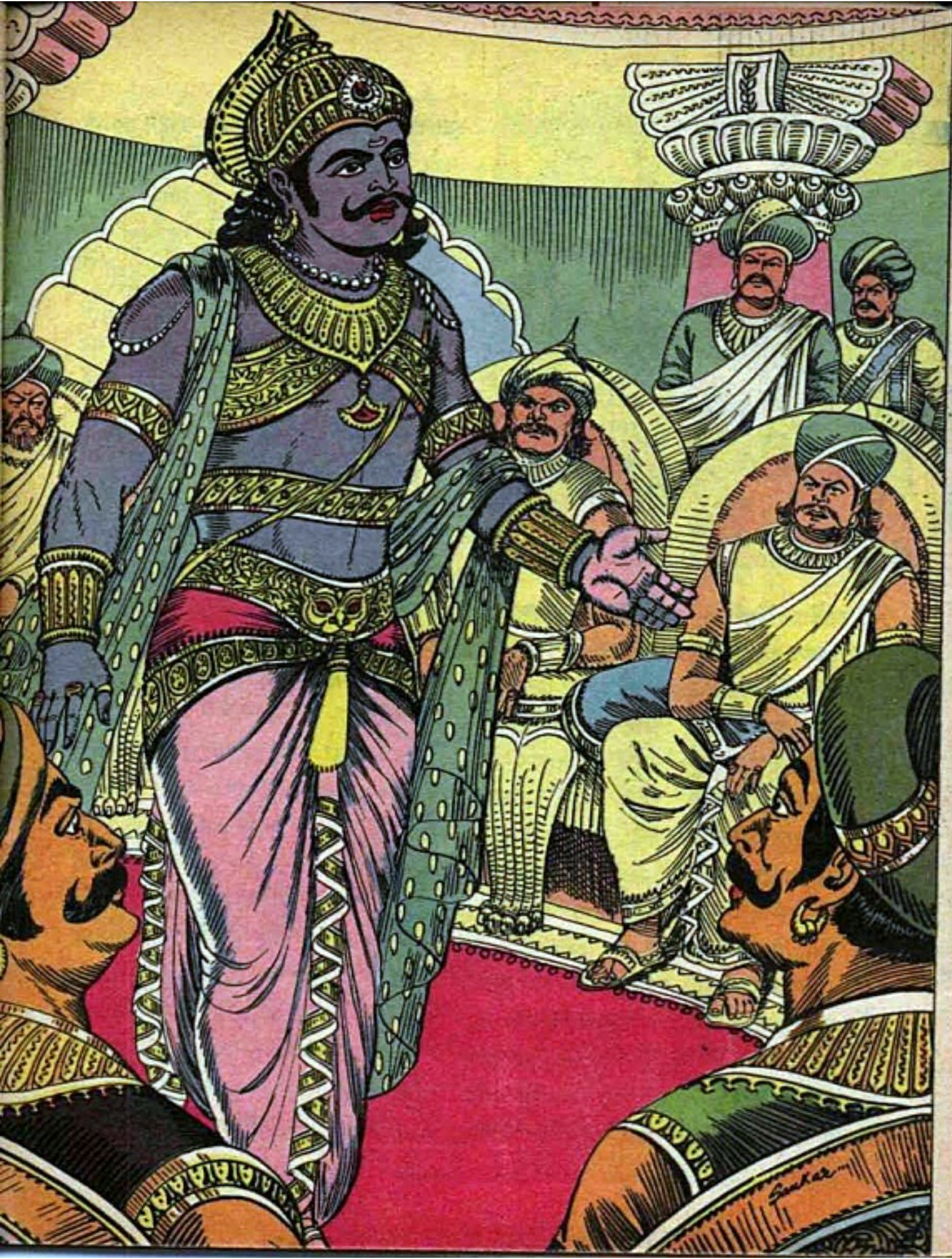
"आज से देवकी के लिए अनेक परिचारिकाओं का प्रबन्ध हो, जो प्रहरियों का कार्य करें। वसुदेव के प्रति भी पूरी सावधानी बरती जाये। देवकी ने कब गर्भधारण किया ? कितने माह चल रहे हैं? कब उसका प्रसव होगा, इत्यादि सारे विवरण मुझे तत्काल मिलने चाहिएं। पर याद रखो, यह सब कुछ अत्यन्त गुप्त रूप से होना चाहिए। ऐसा क्यों किया जा रहा है, इसका पता किसी को नहीं लगना चाहिए।" इसप्रकार कंस ने सबको अलग कर्त्तव्यों के प्रति सावधान कर दिया।

इस बीच नारद मथुरा नगरी से सीधे विष्णुधाम पहुँचे और उन्हें विस्तारपूर्वक कंस के साथ हुई अपनी वार्ता के बारे में बताया। नारद ने बताया कि उन्होंने कंस के मन में विष के बीज बो दिये हैं और कंस अब शिशु हत्या जैसे अनेक जघन्य कार्यों में प्रवृत्त हो रहा है। उन्होंने यह भी कहा कि कंस के पापों का घड़ा अब अधिक काल तक पृथ्वी पर नहीं रह सकता।

नारद के चलेजाने के बाद महाविष्णु यह विचार करने लगे कि कंस की सारी योजनाओं से बचकर वे किसप्रकार अवतार लें। इस संदर्भ में उन्हें एक पुराना वृत्तान्त स्मरण हो आया। वह कथा इस प्रकार थीः पाताल लोक में कालनेमि के छह पुत्र रहा करते थे। उन्होंने सदा अमर बने रहने का वरदान प्राप्त करने के लिए ब्रह्मा को लक्ष्य कर तपस्या आरंभ की। उस काल में तीनों लोकों पर हिरण्यकश्यपु का आधिपत्य था। जब उसे इन छह दैत्य-पुत्रों की तपस्या का पता लगा, तो उसने क्रुद्ध होकर शाप दिया, 'कुलश्रेष्ठ मेरे रहते हुए तुम लोग देवताओं आदि से वर पाने की कामना करते हो? जाओ, तुम्हारे पिता ही तुम्हारा घात करेंगे।'

इस बात का स्मरण आते ही भगवान विष्णु ने योगमाया को पुकार कर आदेश दिया, "योगमाया, तुम्हारे द्वारा एक महान कार्य संपन्न होना है। कालनेमि के छह पुत्र हैं। उन छहों पुत्रों को क्रमशः तुम्हें देवकी के गर्भ में प्रवेश कराना होगा उनके जन्म लेते ही कंस एक के बाद एक छहों को मार देगा। इस प्रकार हिरण्यकश्यपु का शाप भी सत्य हो जायेगा और मेरे अवतरण का मार्ग भी खुल जायेगा। देवकी जब सातवीं बार गर्भ धारण करे, तो तुम गर्भ को रोहिणी के अन्दर रख देना। लोग यही सोचेंगे कि कंस के भय से

सातवीं बार देवकी का गर्भस्राव होगया है। वह शिशु मेरे बड़े भाई के रूप में रोहिणी के गर्भ से जन्म धारण करेगा। इसके बाद मैं देवकी की आठवीं सन्तान के रूप में उसके गर्भ में प्रवेश करूँगा। उस समय तुम भी कंस के गोपालक नन्द की पत्नी यशोदा कें गर्भ में प्रवेश करना। हम दोनों अर्धरात्रि के समय जन्म धारण करके स्थान-परिवर्तन कर लेंगे। इसके बाद जब कंस तुम्हें पत्थर पर पटककर मार ड़ालने का प्रयत्न करेगा, तब तुम आसमान में उड़ जाना। इंद्र तुम्हारा स्वागत करने के लिए उपस्थित होंगे और आदिशक्ति के रूप में तुम्हारा अभिषेक करेंगे। उस समय तुम्हारा मेघनीलवर्ण होगा, पूर्ण चंद्र जैसा मुख मंडल होगा, हाथों में शारंग, चक्र, गदा, पद्म खड्ग, मधुकलश, मूसल तथा शूल एवं शरीर पर नील वर्ण की रेशमी साड़ी धारण कर तुम समस्त देवताओं के द्वारा श्रद्धा एवं भक्तिपूर्वक पूजित होओगी।"

योगमाया भगवान विष्णु के आदेश को हृदयंगम कर वहाँ से चली गयी। योगमाया की शक्ति से देवकी ने कालनेमि के छह पुत्रों को छह बार गर्भ में धारण किया। जब भी देवकी का प्रसव-काल निकट आता, तब-तब कंस के सेवक यह समाचार तुरन्त कंस को दे देते। कंस देवकी के कक्ष में प्रवेश कर उस शिशु को लेजाता और उसके पैर पकड़कर उसे पत्थर पर पटक देता। इस प्रकार कंस ने देवकी के छह पुत्रों की दारुण हत्याएँ कीं।

देवकी जब सातवीं बार गर्भवती हुई, तब योगमाया उस गर्भ को लेगयी और उसे रोहिणी की कोख में रख दिया। भगवान का दिव्य अंश रोहिणी के गर्भ में बड़ा होने लगा। उधर देवकी

के बारे में यह बात फैल गयी कि देवकी के सातवां गर्भ नष्ट होगया है। रोहिणी ने नियत समय पर पूर्ण चंद्र जैसे सुन्दर पुत्र को जन्म दिया। गर्भ-संरक्षण द्वारा उत्पन्न होने के कारण यह पुत्र सकर्षण कहलाया। इसी का नाम बलभद्र अथवा बलराम पड़ा।

बलराम के जन्म के पश्चात् देवकी ने आठवीं बार गर्भ धारण किया। उसी दिन गोकुल में नन्द की पत्नी यशोदा ने भी गर्भ धारण किया। नौ माह पूरे होकर दसवाँ माह चलने लगा। श्रावण मास के कृष्ण पक्ष में अष्टमी के दिन अर्धरात्रि के समय जब पाँच ग्रह उच्च दशा में थे, उस मुहूर्त में भगवान विष्णु के अंश ने कृष्ण का रूप लेकर देवकी के गर्भ से जन्म लिया। उस क्षण देवकी एवं वसुदेव के अतिरिक्त सब निद्रामग्न थे पहरेदार गाढ़ निद्रा में मग्न शवों की भाँति पड़े हुए थे।

जब देवकी के गर्भ से कृष्ण ने जन्म लिया, पास न होने पर भी वसुदेव के मन में यह भाव उत्पन्न हुआ कि देवकी के पुत्र हुआ है। वह तत्काल देवकी के पास गये। वहाँ उन्हें ऐसा प्रतीत हुआ, मानो चंद्रोदय होगया है। शिशु का सौन्दर्य दिव्य और अलौकिक था। उसके प्रभाव से वातावरण दीप्तिमान हो उठा था। सद्यजात शिशु घने केश एवं मेघवर्ण की द्युति से शोभायमान था। उसकी देह में कहीं छोटा-सा भी धब्बा या मालिन्य न था और वह अपने विशाल नेत्र खोलकर चारों दिशाओं में देख रहा था। उसकी नीलोत्पल छवि से आँखें हटाये न हटती थीं।

"मैं दुष्ट कंस को इस शिशु की हानि न करने दूँगा। मैं इसे अभी कहीं ले जाकर छिपा दूँगा।" वसुदेव ने अपने मन में सोचा।

देवकी ने प्रसव-वेदना का अनुभव किये बिना उस शिशु को जन्म दिया था। पर इसके बाद उसकी समझ में न आया कि आगे उसे क्या करना है। वह किसी भी तरह इस शिशु की प्राण-रक्षा चाहती थी। उसे नारद की भविष्यवाणी का विचार आया। निश्चय ही इस शिशु की रक्षा होगी। कंस इसका स्पर्श भी नहीं कर सकेगा। वसुदेव ने शिशु को कहीं छिपा देने की अपनी योजना को देवकी को बताया और उसकी गोद से उस शिशु को उठा लिया। इसके बाद वसुदेव

बड़ी तीव्र गति से गोपालक नन्द के घर पहुँचे। नन्द-पत्नी यशोदा एक बालिका को जन्म देकर निद्रामग्न थी। वसुदेव ने उसके पार्श्व में अपने पुत्र को लिटा दिया और उसकी कन्या को उठाकर अत्यन्त शीघ्रता से देवकी के कक्ष में लौट आये। उन्होंने उस कन्या को देवकी के पार्श्व में लिटाया और कंस के पास जाकर बताया कि देवकी ने एक शिशु को जन्म दिया है।

यह समाचार सुनते ही कंस घबराकर उठ बैठा और जल्दी से अपनी वेशभूषा संवारकर देवकी के कक्ष के द्वार पर जाकर खड़ा होगया। उसने ज़ोर से चिल्लाकर कहा, "शिशु को मुझे दो।"

देवकी ने उस अद्‌भुत सुन्दर कन्या को अपने वक्ष से लगा लिया और कहा, "भैया, क्रोध मत करो! इस बार मैंने एक लड़की को जन्म दिया है। यह दुर्बल तुम जैसे जगत-विख्यात वीर का क्या बिगाड़ सकती है? कृपा करके इसे जीवित रहने दो! इसके पहले जो बालक जन्मे, वे सब लड़के थे। तुमने उनका वध किया, पर मैं इसलिए मूक बनी रही कि कहीं उनके द्वारा तुम्हारी कोई हानि न हो जाये। इसलिए इस बार मुझ पर दया करो, इस कन्या को छोड़ दो!"

पर कंस पर देवकी की मिन्नतों का कोई प्रभाव न पड़ा। उसके हृदय में तो अपनी मौत का भय समाया हुआ था—आँखों में हर क्षण मौत ही नाचा करती थी।—काल का रूप क्या होगा, कोई नहीं जानता-वह देवकी की किसी भी संतान को जिवित नहीं छोड़ेगा, फिर यह तो आठवीं अमांगलिक संतान है। वह प्रसूति-गृह में घुसने लगा। यह देख वहाँ की प्रतिहारियाँ हाहाकार कर उठीं। कंस ने देवकी के हाथों से बलपूर्वक शिशु को छीन लिया और अन्य शिशुओं की भाँति उसे पत्थर पर पटकने लगा कि तभी वह बालिका कंस के हाथों से निकलकर ऊपर उठी और आदि शक्ति का रूप धारण कर आकाश में खड़ी होगयी। इसके बाद वह पान कलश से मधु पीकर अट्टहास करती हुई कंस से बोली, "अरे दुष्ट! मुझे पत्थर पर पटककर मार डालना चाहता था, पर मैं स्वयं तेरी कालमृत्यु हूँ। जब तेरा प्रबल शत्रु तेरा घात करने आयेगा, तब मैं मृत्युदेवी बनकर तेरे प्राणों का हरण करूँगी। तू क्या सोचता है कि तू भवितव्यता को टाल सकता है;

अब तू गर्व मत कर! तेरा संहारक जन्म ले चुका है। तेरी मृत्यु निश्चित है।" यह कहकर योगमाया अदृश्य होगयी।

उसी समय कंस देवकी के पास पहुँचा और हाथ जोड़कर बोला, "बहन, मैंने प्राणों के भय से महान पाप किये हैं। तुम्हारे सभी बच्चों को मारकर तुम्हें अपार दुख पहुँचाया है। फिर भी, मेरा प्रयत्न सफल नहीं हुआ। तुच्छ मानव के प्रयत्न से ब्रह्मा के लेख को मिटाना असंभव है। हम तो केवल निमित्तमात्र हैं, प्राणियों के रक्षक और संहारक तो स्वयं कालपुरुष है। इसलिए तुम अपने दुख को भूल जाओ। मैं तुम्हारे पैर पकड़कर तुमसे विनती करता हूँ।"

देवकी ने कंस को सांत्वना देकर कहा, "भैया, मेरे ललाट में यह दुख भोगना लिखा था, ऐसी हालत में तुम क्या कर सकते हो? मैं अपने प्यारे भाई के हाथों से ही इस दारुण दुख को झेलने के लिए इस पृथ्वी पर आयी थी, तुम शोक मत करो!" देवकी ने कंस को समझाकर विदा

सुबह होने से पहले ही वसुदेव नन्द गोपालक के घर पहुँचे। नन्द पुत्र-जन्म के उल्लास में मग्न थे। उनहें अत्यन्त प्रसन्न देख वसुदेव ने कहा, "तुमने कैसे सुन्दर पुत्र को पाया है! तुम भाग्यवान हो! तुम अपने पुत्र को लेकर अपने गाँव गोकुल चले जाओ! वहाँ मेरी पत्नी रोहिणी के भी एक पुत्र है। उसे तुम अपना ज्येष्ट पुत्र मानना और इस बालक को अपना कनिष्ठ पुत्र मानना। क्रूर पापी कंस ने देवकी के गर्भ से उत्पन्न सभी शिशुओं को मार डाला है। बस, रोहिणी से जन्म लेनेवाला बालक ही बच गया है

कंस ने शिशुओं का संहार करने के लिए पूतना को नियुक्त किया है। वह शिशुओं की खोज करती घूम रही है।

तुम इस नगर में शुल्क जमा करने आये हो न? यह काम भी पूरा होगया है। इसलिए तुम अब थोड़ा भी विलम्ब किये बिना यहाँ से चले जाओ

वसुदेव के मुख से सारी बात सुन-समझकर नंद शिशु और अपनी पत्नी यशोदा के साथ छोटी बैलगाड़ी पर सवार होगये और शीघ्र ही अपने गोपालकों एवं पशु समुदाय के निकट जा पहुँचे।
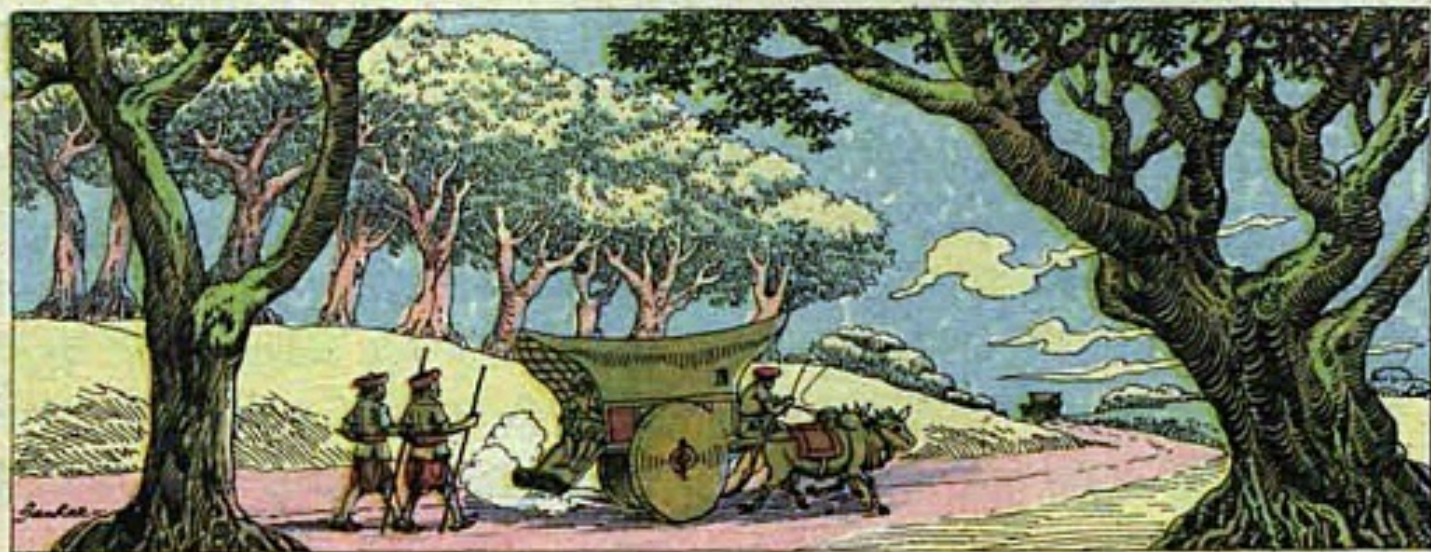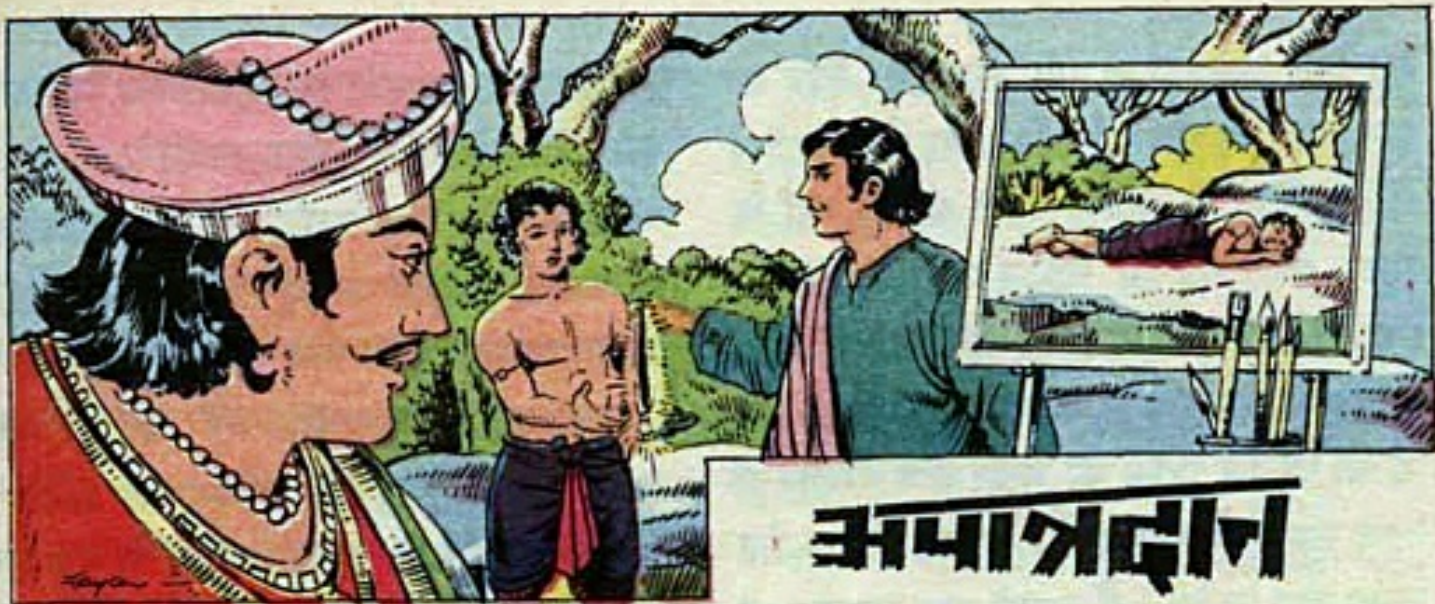
अपात्रदान

श्रावस्ती के राजा सुकेतु जब कभी राजकार्य से थोड़ा अवकाश पाते, शिकार के लिए निकल जाते थे। एक बार वे शिकार खेलने के लिए एक बन में गये तो वहाँ नदी-नाले एवं पहाड़ी पार करते हुए अपने परिजनों से अलग होगये। आगे बढ़ते हुए एक स्थान पर उन्होंने देखा कि एक युवक गड़रिया गहरी नींद सो रहा है और एक चित्रकार चित्रपट पर उसका चित्र अंकित कर रहा है।

वह गड़रिया युवक एक वृक्ष की छाया में चट्टान पर सो रहा था। राजा बिना आहट किये धीर-धीरे उस चित्रकार के पास पहुँचे और अत्यन्त भोले लगनेवाले सो रहे गड़रिये का चित्र अंकित कर रहे उस चित्रकार का अभिनन्दन किया।

चित्रकार ने राजा को पहचान कर उन्हें अभिवादन किया और बोला, "महाराज, मेरा नाम अनन्त है। आप इस गड़िरिये नवयुवक को देखिये, यह यहाँ भड़ें चराने आया था। यह वह प्रदेश है जहाँ चीते एवं भालू स्वेच्छापूर्वक विहार करते हैं। यह युवक भड़ों की और अपनी रक्षा की चिन्ता किये बिना किस प्रकार शांति से सो रहा है ?है न कैसी अद्भुत बात! बस इसी कारण मैं इस पर आकर्षित हो गया और इसका चित्र आँकने लगा।"

राजा सुकेतु को भी उस युवक की शांत नींद पर आश्चर्य हो रहा था। पर चित्रकार की बात का कोई उत्तर न देते हुए उन्होंने अपना बहुमूल्य कंठहार उतारा और चित्रकार के हाथ में देकर कहा, "अनन्त, तुम्हारा यह चित्र मैं ले लेता हूँ। तुम पुरस्कार के रूप में यह हार ग्रहण करो!"

चित्रकार अनन्त ने सो रहे गड़रिये को जगाकर वह हार उसे देकर राजा सुकेतु से कहा, "महाराज, हो सकता है कि चित्रकला के क्षेत्र में

मेरी कोई प्रवीणता हो, पर इस सुन्दर चित्र का मूल कारण यह युवक है और इसका भोलापन है। मैं इस प्रदेश में इसलिए आया था कि यहाँ के सुन्दर बन-दृश्य को चित्रित करूँ। यहाँ के प्राकृतिक सौन्दर्य को अपनी तूलिका का विषय बनाऊँ पर जंगल के बीच इस प्रकार निर्भय-निश्चिंत सो रहे इस युवक की सुन्दर छवि देखकर मैं अन्य सब कुछ भूल गया। अवश्य ही यह श्रेष्ठ मनुष्य होना चाहिए। मैं आपसे प्राप्त पुरस्कार को इसी युवक को प्रदान करना चाहता हूँ।"

चित्रकार की बात सुनकर राजा सुकेतु ने अपनी उंगली से हीरक अंगूठी निकाल कर चित्रकार को दी और कहा, "अनन्त, यह अंगूठी तुम्हारे स्मरण के लिए है कि तुम्हें मेरे लिए एक और सुन्दर चित्र बनाना है। मैं उस दिन की प्रतीक्षा करूँगा, जब तुम एक अन्य विलक्षण कलाकति लेकर मेरे पास आओगे।"

इस बीच राजा सुकेतु के परिजन उनकी खोज करते हुए वहाँ आ पहुँचे। राजा राज-परिकर सहित श्रावस्ती लौट गये।

इस घटना के पच्चीस वर्ष बाद चित्रकार अनन्त राजा सुकेतु के दरबार में आया। उस समय राजा सुकेतु जंजीरों से बंधे एक डाकू को मौत की सज़ा सुना रहे थे। इसके बाद उन्होंने अपने राजसैनिकों से कहा, "यह सज़ा कल अमल में लायी जाये।"

अनन्त एक कलाकार की दृष्टि से उस डाकू के भाव को परख रहा था। इतने में राजा ने उसे पहचान कर कहा, "चित्रकार का स्वागत है! कोई सजीव चित्र खींच कर लाये हो?"

अनन्त ने सैनिकों द्वारा कारागार की ओर ले जारहे डाकू की तरफ़ संकेत कर राजा से कहा, "महाराज, कठोरता और पशुता कितना चरम रूप धारण कर करती है, इसका ज्वलंत उदाहरण इस डाकू के चेहरे की क्रूरता है। मैं मानव के इस पक्ष का भी सजीव अंकन करना चाहता हूँ। आप मुझे अनुमति प्रदान कीजिए !"

राजा सुकेतु ने चित्रकार को अनुमति दे दी।

अनन्त डाकू के कारागार में गया। डाकू ने उसे देखते ही भौंहें सिकोड़ीं और अपना सिर दूसरी तरफ़ मोड़ लिया।

अनन्त ने डाकू को अपने आने का कारण बताया। डाकू कुछ देर अनन्त की इच्छा के अनुसार मौन अविचल बैठा रहा। परिणामस्वरूप अनन्त ने चित्र शीघ्र ही पूरा कर लिया।

अनन्त अपने चित्र की सफलता पर तो प्रसन्न था ही, पर वह डाकू के सहयोगपूर्ण बर्ताव से भी बहुत प्रसन्न हुआ। उसने पच्चीस वर्ष पूर्व राजा सुकेतु से प्राप्त हीरे की अंगूठी डाकू को देनी चाही, पर डाकू ने लेने से साफ़ इनकार कर दिया और धीरे से पूछा, "क्या सचमुच आपने मुझे नहीं पहचाना ?"

डाकू का यह प्रश्न सुनकर अनन्त को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने अस्वीकृति में अपना सिर हिलाया।

डाकू बड़े व्यंग्य से ज़ोर से खिलखिलाकर हँस पड़ा, फिर कुछ खिन्न स्वर में बोला, "मुझे आप नहीं पहचान पाये। महाराज ने भी नहीं पहचाना। यह मेरा दुर्भाग्य है।"

अनन्त उसकी बातों का अर्थ नहीं समझ

सका। उसने पूछा," महाराज सुकेतु जब तुम्हें मौत की साज़ा सुना रहे थे, तब मैं दरबार में मौजूद था। यदि तुम ऐसा सोचते हो कि महाराज से तुम्हारी कोई पहचान है, तो तुमने उन्हें अपना परिचय क्यों नहीं दिया ?"

"मैं यही सोचकर चुप रहा कि अब समय बीत गया है।क्या आप इस समय मुझे महाराज के समक्ष ले जा सकते हैं ?" डाकू ने पूछा।

डाकू की बातों के पीछे किसी महत्वपूर्ण रहस्य का आभास पाकर चित्रकार अनन्त तुरन्त राजा सुकेतु के पास गया और उन्हें सारा वृत्तान्त सुनाया। सब सुनकर राजा सुकेतु के मन में भी कौतुहल जागृत हुआ। उन्होंने सैनिकों को आदेश दिया कि डाकू को तुरन्त उनके सामने उपस्थित किया जाये।

राजसैनिक डाकू को महाराज सुकेतु के समक्ष ले आये। डाकू ने चित्रकार अनन्त की ओर संकेत कर राजा सुकेतु से कहा, "महाराज, यह चित्रकार ही मेरी दुरवस्था का मूल कारण है। यह अब भी मेरी दुर्दशा से सन्तुष्ट नहीं हुआ और मुझे धन का लोभ दे रहा है। आपने इसे जो हीरे की अंगूठी भेंट दी थी, वह यह मुझे अब अपने दूसरे चित्र की सफलता की खुशी में भेंट करना चाहता है।"

डाकू की बात सुनकर राजा सुकेतु को और अधिक आश्चर्य हुआ। उन्होंने पूछा, "तुम्हें यह बात कैसे विदित हुई कि चित्रकार को यह अंगूठी मैंने भेंट की थी।"

डाकू मुस्कराकर चुप रहा, फिर क्षण भर बाद बोला, "महाराज, आज से पच्चीस वर्ष पहले मैं एक भोला-भाला अबोध गड़रिया था और भेड़ें पालकर सुख-चैन की नींद सोया करता था। एक दोपहर भयानक जंगल में पेड़ के नीचे पड़ी चट्टान पर मैं गहरी नींद सोरहा था, तब इसी चित्रकार ने मेरे उस रूप पर प्रसन्न होकर एक चित्र आँका था। तब आपने इस चित्रकार की प्रतिभा पर प्रसन्न होकर इसे अपना कंठहार पुरस्कार में दिया था। वही कंठहार अब मेरे लिए फाँसी का फंदा बनने जा रहा है।"

यह बात सुनते ही राजा सुकेतु और चित्रकार अनन्त को सब स्मरण हो आया। वे समझ गये कि यह भयानक डाकू और कोई नहीं, पच्चीस

वर्ष का पहले भोला गड़रिया है। पर वे यह नहीं समझ सके कि वह सरल सीधा आदमी इतने क्रूरता भरे कर्मों को करनेवाला जघन्य डाकू कैसे बन गया ? राजा सुकेतु ने डाकू से सारा वृत्तान्त वर्णन करने का आग्रह दिखाया ।

डाकू ने कहा, "महाराज, आपने इस चित्रकार को जो अपना हार भेंट किया था, वह इसने मुझे दे दिया था। उस हार को लेकर मैं विजयनगर गया और उसे एक जौहरी के हाथ बेचना चाहा। मेरी वेशभूषा और उस बहुमूल्य हार में कोई तालमेल न देखकर जौहरी ने मुझे कोतवाल के हाथ सौंप दिया। कोतवाल ने मेरी सच्ची कहानी पर तनिक भी विश्वास न करके मुझे कारागार में डाल दिया। कारागार में डाकूओं से मेरा परिचय हुआ, फिर दोस्ती हुई और मैं एक नेक इन्सान से बदनीयत डाकू में बदल गया ।

राजा सोचने लगे कि जंगलों में निश्चित भेड़-बकरियाँ चराने वाला एक भोला-भाला मनुष्य एक बहुमूल्य हार के कारण ही कितना जघन्य बन गया !

राजा सुकेतु ने डाकू से पूछा, "तुमने जो अनेक भीषण अपराध किये हैं अनेक चोरियां की हैं, लोगों को त्रास दिया है, प्रजा में आतंक फैलाया है, तुम्हें उस पर पश्चाताप है या नहीं ?"

डाकू सिर झुकाकर नम स्वर में बोला, "महाराज, मेरे पश्चाताप की कोई सीमा नहीं है। लेकिन कल तो मैं मौत का ग्रास बन जाऊँगा।

राजा सुकेतु ने कहा, "तुम्हें मैं अपने पशुपालक-दल का नायक बनाता हूँ। अब तुम वह काम संभाल लो और फिर से एक नेक मनुष्य बनकर दिखाओ ! जाओ !"

इसके पश्चात् राजा सुकेतु ने अपना अत्यन्त मूल्यवान हार चित्रकार अनन्त को भेंट करते हुए कहा, "अनन्त विद्वानों ने ठीक ही कहा है कि अपात्र को दिया हुआ दान हानिकारक होता है। अपात्रदान का अर्थ है, स्थान, काल को ध्यान में न रखकर दिया हुआ दान। जो हार मैं तुम्हें भेंट कर रहा हूँ, उसे किसी ऐसे मनुष्य को मत दे देना, जो उसके लिए संकट का कारण बन जाये ! उचित स्थान पर ही वस्तु की शोभा है ।"

दो ब्रह्मराक्षस

वीरगाँव में मनोहर नाम का एक गरीब किसान था। उसकी पत्नी का नाम था कमला। ये दोनों किसान पति-पत्नी खेतीबाड़ी के काम में कड़ी मेहनत करके अपना पेट पालते थे। कई वर्ष बाद इनके एक पुत्र हुआ। इन्होंने उसका नाम सुदर्शन रखा। सुदर्शन जब कुछ बड़ा हुआ, उसने अपने माता-पिता से कहा, "खेतीबाड़ी में मेरी कोई रुचि नहीं है। मैं तो विद्या प्राप्त करना चाहता हूँ। मुझे किसी पाठशाला में भेज दो!"

सुदर्शन किसान दम्पति का इकलौता पुत्र था। वे उसका दिल नहीं दुखाना चाहते थे। उन्होंने उसे गाँव के ही एक पंडित श्रीराम के आश्रम में छोड़ दिया। पांच वर्ष की अवधि में सुदर्शन ने वे सारी विद्याएं सीख लीं जो पंडित श्रीराम को ज्ञात थीं और वह काव्य-रचना करने लगा।

एक दिन पंडित श्रीराम ने सुदर्शन के माता-पिता से कहा, "तुम्हारा पुत्र भविष्य में एक महान कवि बन सकता है। पर इस छोटे से वीरगाँव में उसकी कविता का क्या आदर होगा? हमारे देश के राजा जगमोहन सिंह को भी कविता से विशेष लगाव नहीं है। उचित तो यही है कि सुदर्शन तुम्हारे साथ ही खेती बारी के काम में लग जाये।"

मनोहर और कमला ने अपने बेटे को अनेक प्रकार से समझाया, पर सुदर्शन खेती बारी की तरफ़ आकर्षित नहीं हो सका।

मनोहर असमंजस में पड़ गया। उसने अपनी पत्नी से कहा, "कमला, सुदर्शन हमारा इकलौता लाड़ला पुत्र है, योग्य भी है। हमें उस पर दबाव नहीं डालना चाहिए। हम लोग कुछ और अधिक मेहनत करके उसके लिए धन-संग्रह करेंगे। उस धन से हमारा बेटा बिना किसी चिंता के अपना जीवन सुख से व्यतीत कर सकेगा।"

कमला को अपने पति की बात बहुत अच्छी

अमलेन्द्र

लगी । वह तो सुदर्शन को अपने प्राणों से भी अधिक चाहती थी । पर दुर्भाग्य के सामने किसकी चली है ? एक दिन खेत में साँप के काट लेने के कारण मनोहर मृत्यु का शिकार होगया । यह ख़बर सुनते ही कमला को दिल का दौरा पड़ा और वह भी काल का ग्रास बन गयी ।

माता-पिता के असमय गुज़ार जाने के बाद रिश्तेदारों ने कुछ दिनों के लिए सुदर्शन को अपने घर में आश्रय दिया और फिर छल-कपट करके उसकी ज़मीन-जायदाद हड़प ली ।

रिशतेदारों को अब सुदर्शन भार प्रतीत होने लगा । उन्होंने उससे कहा, "तुम्हारा खर्च हम तभी उठा सकते हैं, जब तुम खेतीबाड़ी के काम में हमारे साथ कड़ी मेहनत करो ।"

सुदर्शन ने किसी प्रकार का प्रतिवाद नहीं किया और गाँव से निकल पड़ा । वह एक बन से होकर गुज़र रहा था । भूख-प्यास और थकान के कारण वह एक पेड़ की छाया में बैठ गया । चारों ओर की प्रकृतिक छटा देखकर उसका हृदय आनन्द से भर गया ।

सुदर्शन जिस वृक्ष की छाया में बैठा था, उस पर बहुत दिनों से एक ब्रह्मराक्षस रहा करता था । अपने किसी पूर्व संस्कार के कारण वह ब्रह्मराक्षस कविता पर अपनी जान देता था । सुदर्शन वृक्ष के नीचे बैठा अपनी कविता का पाठ कर रहा था, कि ब्राह्मराक्षस उसके सामने उपस्थित हो गया । उसने कहा, "तुम प्रतिदिन मुझे अपनी कविता सुनाते रहो, उसके पुरस्कार स्वरूप तुम मुझसे जो भी माँगोगे, मैं तुम्हें दूँगा ।"

सुदर्शन ने ब्रह्मराक्षस की बात स्वीकार कर ली

कविता सुनकर ब्रह्मराक्षस ने सुदर्शन के सामने स्वादिष्ट भोजन उपस्थित किया । सुदर्शन ने संतुष्टिपूर्वक भोजन खाया । तब ब्रह्मराक्ष्स ने उसके सोने के लिए शैय्या आदि का प्रबन्ध किया और स्वयं उसका पहरा देने लगा ।

कुछ दिन आराम से बीत गये । एक दिन ब्रह्मराक्षस ने सुदर्शन से कहा, "आज तक मैंने तुम्हारी कविता अनेक विषयों पर सुनी, साथ ही तुम्हारी सेवा भी की । अब मेरी इच्छा है कि तुम मुझ पर काव्य-रचना करो और मुझे सुनाओ !"

"मैं जिस देवी प्रकृति पर काव्य-रचना करता हूँ उसने मुझसे कभी नहीं कहा था कि मैं उस पर कविता रचूँ । मैं अपनी प्रेरणा और रुचि से ही कविता करता हूँ, किसी के कहने या आज्ञा देने से नहीं ।" सुदर्शन ने उत्तर दिया ।

"तुम्हें मुझ पर काव्य-रचना करनी ही होगी । तब तक मैं तुम्हें इस जंगल से बाहर न जाने दूँगा ।" ब्रह्मराक्षस ने क्रुद्ध होकर कहा ।

"तुम्हारी धमकियाँ और क्रोध मेरे अन्दर कविता पैदा नहीं कर सकते । तुम्हें जो करना हो, करो!" सुदर्शन ने स्पष्ट कह दिया ।

उस दिन से ब्रह्मराक्षस ने सुदर्शन को खाना देना बंद कर दिया । सुदर्शन दिन प्रतिदिन दुर्बल होता गया, पर उसने ब्रह्मराक्षस के लिए कविता नहीं लिखी । राक्षस उसे गेंद की भाँति हवा में उछालता और अपना मनोरंजन करता । सुदर्शन सहन करता रहा । आखिर ब्रह्मराक्षस खीझ उठा । उसने उसके पैर पकड़कर उसे ज़ोर से चक्कर खिलाया और दूर फेंक दिया। भाग्य से सुदर्शन राजा जगमोहन की शैया पर जा गिरा ।

राजा चौंककर जाग उठे । सुदर्शन को इस तरह अपने बिस्तर पर देखकर बोले, "तुम कौन हो? यहाँ कैसे प्रवेश कर पाये ?"

सुदर्शन ने अपनी सारी रामकहानी राजा को सुना दी । राजा जगमोहनसिंह को उसकी कहानी अत्यन्त विचित्र लगी । फिर भी उन्होंने उस पर अविश्वास नहीं किया । राजा जगमोहनसिंह ने सुदर्शन के मुख से कुछ पंक्तियों को सुनकर कहा, "तुम कुछ दिन के लिए मेरे दरबार में रहो !"

सुदर्शन ने प्रसन्नतापूर्वक अपनी स्वीकृति दी ।

राजदरबार का प्रत्येक व्यक्ति सुदर्शन की कविता की प्रशंसा करने लगा । उसने देश, नगर,

उद्यान, वन-पर्वत एवं नदियों के सौंदर्य पर अनेक कविताएँ रचीं। उन्हें लोग गीतों के रूप में गाने लगे और वे अत्यन्त लोकप्रिय होगयीं। अब तो जन-जन के मुँह पर सुदर्शन का नाम था।

एक दिन रानी सुलक्षणा ने राजा से अनुरोध किया, "स्वामी, कवि की कविता ऐसी चीज़ है जो साधारण से साधारण विषय को भी श्रेष्ठ सौंदर्य की कोटि में ले आती है। वह जिसको चाहे लोकप्रिय, जनप्रिय बना सकता है। आप राजकवि सुदर्शन को आदेश दें कि वह आपको अपने काव्य का नायक और मुझे नायिका बनाकर कोई उत्कृष्ट कृति रचे।"

राजा जगमोहनसिंह को रानी सुलक्षणा की बात अत्यन्त प्रिय लगी। वे सोचने लगे कि यदि सुदर्शन उन पर कोई काव्य रचना कर सका, तो वे सदा के लिए अमर होजायेंगे।

अपने विचार को कार्यान्वित करने के लिए राजा जगमोहनसिंह ने कवि सुदर्शन को बुलाया और महारानी की मनोकामना के बारे में बताया। सुदर्शन ने नम्रतापूर्वक निवेदन किया, "महाराज, आप मुझे क्षमा करें! जब कोई सौन्दर्य मेरे हृदय को आकर्षित करता है अथवा मुझे प्रभावित करता है, तब उसकी प्रेरणा से ही मैं काव्य-रचना कर सकता हूँ। मैं किसी के अनुरोध या आदेश से कविता रचने में असमर्थ हूँ।"

राजा जगमोहनसिंह ने सुदर्शन को सोचने के लिए एक सप्ताह की अवधि दी, पर उसके निर्णय में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। राजा क्रोधित हो उठे उन्होंने कवि को कारागार में डलवा दिया।

एक वर्ष बीत गया। एक दिन राजा

जगमोहनसिंह कवि सुदर्शन को देखने गये। उन्होंने उससे पूछा, "तुम्हें कारागार का यह जीवन कैसा लगता है ?"

"महाराज, यहाँ के एकाकीपन ने मेरे हृदय को भगवान की ओर प्रवृत्त कर दिया है। अब वे ही मेरी कविता के नायक हैं। उन पर कविता रचकर मैं अत्यन्त संतोष से अपने दिन बिता रहा हूँ।" सुदर्शन ने सहज उत्तर दिया।

"तुम किसी अदृश्य भगवान पर काव्य-रचना कर क्या पाओगे ? मैं तुम्हारे सामने प्रत्यक्ष देवता हूँ। तुम जो भी चाहोगे, मैं दे सकता हूँ।" राजा ने कहा।

तब सुदर्शन ने उसी समय रचकर एक कविता सुनायी, जिसका आशय इस प्रकार था:

"मैंने सोचा था कि भाग्य देवी ने मुझे ब्रह्मराक्षस के चंगुल से मुक्त कर एक रक्षक के हाथों में दे दिया है, पर वास्तव में उस देवी ने मुझे एक और ब्रह्मराक्षस के पास पहुँचा दिया है। यह सत्य मैं बहुत विलम्ब से समझ सका हूँ। ब्रह्मराक्षस कवियों को सता सकते हैं, उन्हें पीड़ा दे सकते हैं, पर कविता का सृजन नहीं करा सकते।"

सुदर्शन की यह कविता सुनकर राजा की आँखें खुल गयीं। वे समझ गये कि जंगल में वास करने वाले ब्रह्मराक्षस तथा उनके व्यवहार में कोई अन्तर नहीं है। राजा ने सुदर्शन को तत्काल कारागार से मुक्त किया और कहा, "सुदर्शन, तुम पूर्ण स्वतंत्र प्रेरणा से कविता रचते रहो!"

इसके बाद राजा जगमोहनसिंह और रानी सुलक्षणा ने विशेष रूप से कवियों और विद्वानों का आदर करना प्रारंभ किया। वे कुछ ही दिनों में काव्यकला के मर्मज्ञ होगये। उनमें गुणों का प्रवेश हुआ। सुदर्शन उनके चरित्र पर मुग्ध हो उठा और उसने उन दोनों को मुख्य पात्र बनाकर एक श्रेष्ठ काव्य-कृति लिखी।

सूदर्शन ने उस काव्य में एक स्थान पर लिखा:

"जो राजा बिना किसी अनुरोध अथवा आदेश के किसी प्रतिभाशाली कवि से स्वयं पर काव्य-रचना करवा सकता है, वह सचमुच ही महान होना चाहिए।"

भरतपुर गाँव में जंबुनाथ और गौरी नाम के पति-पत्नी रहते थे। जंबुनाथ सीधा-सादा, सरल इन्सान था, पर वह बहुत अधिक आलसी था। न तो वह कोई काम-धंधा जानता था, न करता ही था। वक्त पर खाना खा लेता और दिन भर मटरगश्ती किया करता। उसकी पत्नी गौरी उसे खूब झिड़कियां देती, पर जंबुनाथ कोई जवाब न देकर सोजाता।

एक दिन घर में खाने के लिए अन्न नहीं था। गौरी ने भोजन नहीं पकाया और चुपचाप बैठी रही। जंबुनाथ घुम-घामकर घर आया और गौरी से खाना परोसने को कहा। झगड़ालू गौरी ने अपने पति को खूब खरी-खोटी सुनायी, बोली, "तुम कोई भी काम-धंधा नहीं करते हो आखिर मैं यह गृहस्थी कैसे चलाऊँ? आज से तुम्हें अवश्य ही कोई धंधा करना होगा और दाल-रोटी के लिए अनाज का इंतजाम करना होगा। वरना भोजन नहीं पकेगा। अगर तुम कुछ और नहीं कर सकते तो चोरी करके ही अनाज ले आओ! पेट तो भरे।"

जंबुनाथ पत्नी की बात सुनकर अवाक रह गया। उसने दबे स्वर में पूछा, "तो क्या तुम मुझे चोर बनने की सलाह दे रही हो? चोरी जैसा नीच काम करके पेट पालना तो पाप है, अपराध है। इसके अलावा मैं चोरी करना बिलकुल नहीं जानता।"

"मुझे कुछ नहीं सुनना। जैसा मैं कहती हूँ, वैसा करो! अगर तुमने मेरी बात नहीं मानी तो यह झाड़ू तुम्हारी मरम्मत करेगी।" यह कहकर गौरी ने झाड़ू उठा ली।

जंबुनाथ ने भयभीत होकर पूछा, "तुम मुझे बताओ, चोरी कहाँ करनी है, कैसे करनी है?"

"देखो! दोपहर के वक्त सब लोग खेतों पर काम में लगे होते हैं। उस समय तुम किसी के घर

में घुस जाना और अनाज चुरा लाना।" गौरी ने समझाया। जंबुनाथ गौरी के बताये अुनसार इसी काम में लग गया। गौरी ने जंबुनाथ को संकेत-शब्द भी सिखा दिये। जब भी उसके लौटने में देर होजाती, गौरी गली में निकलकर बड़ी ज़ोर से चिल्लाती, "अदहन का उबा-ल"—जंबुनाथ झट अनाज चुराकर घर चला आता।

जंबुनाथ प्रतिदिन अलग-अलग घरों में चोरी करता। वह प्रतिदिन हर घर से उतना ही अनाज चुराता, जितना उसके घर में एक दिन के लिए ज़रूरी होता। इसके अलावा वह अन्य किसी क़ीमती चीज़ को छूता भी नहीं था।

कुछ ही समय में गाँव के लोग भाँप गये कि गाँव में अनाज की चोरियाँ हो रही हैं। पर इतने थोड़े से अनाज की चोरी के लिए कौन आता होगा, यह वे समझ नहीं सके। उन्होंने एक योजना बनायी और चोर को पकड़ने का निश्चय करके ताक में बैठ गये।

उस दिन जंबुनाथ गाँव के मुखिया राममोहन के घर में चोरी करने के लिए घुसा। छिपकर बैठे ग्रामवासियों ने उसे रंगे हाथों पकड़ लिया और मकान के सामने एक ऊँचे खूंटे से बांध दिया।

जब जंबुनाथ बहुत देर तक भी घर न लौटा तो गौरी गली में पहुँची और ज़ोर से चिल्लाकर बोली, "अदहन का उबाल !"

पत्नी की पुकार सुनकर जंबुनाथ ने ज़ोर से उत्तर में कहा, "खूंटे से निकाल !"

मुखिया की कुछ समझ में नहीं आया। उसने पूछा, "यह तुम क्या कह रहे हो ?"

जंबुनाथ अपनी सारी रामकहानी मुखिया को सुनाकर रो पड़ा। वहाँ पर एकत्रित गांव के सारे लोग खिलखिलाकर हँस पड़े।

इसके बाद मुखिया राममोहन ने गौरी को बुलाकर डाँटा, "तुम कैसी औरत हो? तुम्हें अपने पति को काम करने की प्रेरणा देनी चाहिए थी, पर तुमने उसे चोरी करना सिखाया।" मुखिया ने जंबुनाथ को खरी-खोटी सुनाकर, मेहनत से पेट पालने की सलाह देकर खूंटे से खोल दिया।

इस घटना के बाद जंबुनाथ की आँखें खुल गयीं। उसने काम करने का निश्चय किया और मेहनत-मज़दूरी करके आदारपूर्वक जीने लगा।

घोंघे की चाल

साधारण घोंघे की शीघ्रगति की चाल प्रति घंटा १६४ फुट है। यदि इस गति को मील के हिसाब से बताना हो तो वह प्रति घंटा ०.०३१३ मील चलता है।

गौंडे का सींग

गौंड़े के सींग हिरन अथवा बारहसींगे के सींगों के सदृश हड्डी या हड्डी जैसे पदार्थ से निर्मित नहीं होते। इनके सींग दबाये गये केशों से निर्मित होते हैं।

नेता का अनुसरण

बतख़ जाति के पक्षी 'V' आकृति में प्रयाण करते हैं। एक पक्षी आगे चलता है, दूसरे पक्षी उसका अनुसरण करते हैं। आगे चलनेवाला पक्षी थोड़ी देर बाद पीछे आनेवाले पक्षी को आगे चलने का मौक़ा देता है, इस कारण पक्षी अपने झुंड से खो नहीं पाते।

चापिंच पक्षी

चापिंच नाम का विलायती पक्षी स्वयं कूकना या चहचहाना नहीं जानता। अन्य पक्षियों की कूक का अनुकरण कर यह पक्षी कूकता है।

मिलिये सुपरफ़ाइटर्स से!
Foaming Forhan's Fluoride
मैदान पर सुनील गावस्कर की रग-रग में फड़कता है मुकाबले का जोश.
तभी तो दुनिया उन्हें 'सुपरबैट्समैन' कह कर पुकारती है. पर सुनील गावस्कर कहते हैं – "मैं तो सुपरफ़ाइटर हूँ और मैं अपने बेटे को भी बनाऊँगा सुपरफ़ाइटर. तभी तो मैं उसे बचपन से ही सही दाँव-पेच सिखा रहा हूँ. जैसे दाँतों की देखभाल के लिये फोरहॅन्स फ़्लोराइड—सड़न के खिलाफ़ सुपरफ़ाइटर."
कीटाणु भोजन के कणों पर असर करते हैं
और ऐसे एसिड पैदा करते हैं, जिनसे सड़न शुरू होती है. फोरहॅन्स के सुपरफ़ाइटर में असरकारक फ़्लोराइड है जो दाँतों का इनेमल मज़बूत करके एसिड के हमले को रोकता है.
और फोरहॅन्स का अनोखा एस्ट्रिंजेंट मसूड़ों को कस कर दाँतों को मज़बूत आधार देता है, बरसों बरकरार रहने के लिये.
सुनील साहब और कुछ?
"मैं अपने बेटे को देता हूँ फोरहॅन्स सुरक्षा. आप?"
फोरहॅन्स
३२ बरकरार
GM-113/86 Hn.

फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता :: पुरस्कार ५०)

पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ जनवरी १९८८ के अंक में प्रकाशित की जायेंगी।

S. B. Takalkar

S. G. Shenoy

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ एक शब्द या छोटे वाक्य में हों। ★ नवम्बर १० तक परिचयोक्तियाँ प्राप्त होनी चाहिए। ★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) ५० रु. का पुरस्कार दिया जाएगा। ★ दोनों परिचयोक्तियाँ केवल कार्ड पर लिखकर निम्न पते पर भेजें: **चन्दामामा फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता, मद्रास-२६**

सितम्बर के फोटो - परिणाम

प्रथम फोटो : रोजी है यहाँ!

द्वितीय फोटो : जाते हो कहाँ!!

प्रेषिका : कु. शम्मी टक्कर, ज्योतिनगर, कुरुक्षेत्र-पि. को. १३२११८ (हरियाणा)

चन्दामामा

भारत में वार्षिक चन्दा : रु. ३०-००

चन्दा भेजने का पता :

डॉल्टन एजेन्सीस, चन्दामामा बिल्डिंग्स, वडपलनी, मद्रास - ६०० ०२६

अन्य देशों के चन्दे सम्बन्धी विवरण के लिए निम्न पते पर लिखिये :

चन्दामामा पब्लिकेशन्स, चन्दामामा बिल्डिंग्स, वडपलनी, मद्रास -६०० ०२६

Printed by B.V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., 188 N.S.K. Salai, Madras 600 026 (India) and Published by B. VISHWANATHA REDDI on behalf of CHANDAMAMA PUBLICATIONS, Chandamama Buildings, Vadapalani, Madras 600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.

मनोरंजक एवं ज्ञानवर्द्धक उत्कृष्ट मासिक पत्र

* चन्दामामा हमारे पुराण व साहित्य के श्रेष्ठ रत्नों को क्रमबद्ध रूप में प्रदान करता है ।
* व्यापक दृष्टिकोण को लेकर विश्व साहित्य की अद्भुत काव्य कथाओं को सरल भाषा में प्रस्तुत करता है ।
* मृदुहास्य, ज्ञानवर्द्धक तथा मनोरंजक सुन्दर कहानियों द्वारा पाठकों को आकृष्ट करता है ।
* हमारी पुराण गाथाओं को प्रामाणिक रूप में परिचय करता है ।
* हास्यपूर्ण प्रसंगों तथा व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करने वाले शीर्षकों के साथ पाठकों का उत्साह वर्द्धन करता है ।
* चन्दामामा केवल आपके जीवन में ही नहीं बल्कि आपके बन्धु एवं मित्रों के जीवन में भी रचनात्मक पात्र का व्यवहार करता है । इसलिए आप अपने घनिष्ट मित्रों को चन्दामामा भेंट कीजिए ! उपहार में दीजिए !

बच्चों के लिए प्रस्तुत चन्दामामा, पाठकों में नवयौवन का उत्साह एवं आनन्द प्रदान करता है ।

तेरह भाषाओं में प्रकाशित चन्दामामा का साप किसी भी भाषा का ग्राहक बन सकते हैं !

तेलुगु, तमिल, हिन्दी, अंग्रेज़ी, असामी, बंगाली, गुजराती, कन्नड, मलयालम, मराठी, उडिया, पंजाबी और संस्कृत ।

वार्षिक चन्दा: रु. ३०-००

आप किस भाषा का चन्दामामा चाहते हैं, इसका उल्लेख करते हुए निम्न लिखित पते पर अपना चन्दा भेजिए:

डाल्टन एजेन्सीस

चन्दामामा बिल्डिंग्स,

वडपलनी, मद्रास-६०० ०२६.

CHANDAMAMA